नई दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, झारखंड, उड़ीसा, बिहार से प्रसारित

सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2)
Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 357, नई दिल्ली, सोमवार 22 फरवरी 2026, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

त्याग के बिना कुछ भी पाना संभव नहीं है, एक सांस लेने के लिए भी एक सांस छोड़नी पड़ती है।

03 मास्टर नंबर अंक ज्योतिष में (11, 22, 33)

06 पढ़ने का परिवेश : ज्ञान, चिंतन और व्यक्तित्व निर्माण की आधारशिला

08 जब्त शराब गिरफ्तार व सील दुकानशहर के लाइसेंसी वाइन शॉप में नकली शराब!

हरियाणा सड़कों पर ओवरलोडिंग का महासंकट: आरटीओ की निष्क्रियता और ट्रेक्टर-ट्रॉली का खतरनाक खेल

ओवरलोड वाहनों पर कार्रवाई का अभाव, चालान में भ्रष्टाचार की बाढ़

संजय कुमार बाठला

हरियाणा प्रदेश में 50 प्रतिशत से अधिक वाहन ओवरलोड होकर सड़कों पर दौड़ रहे हैं, लेकिन परिवहन विभाग (आरटीओ) पूर्ण ओवरलोडिंग पर कोई सख्त कार्रवाई नहीं कर रहा।

चालान ज्यादातर गलत तरीके से काटे जाते हैं। विरोध करने पर गाड़ी मालिकों को स्टॉप पर घंटों परेशान किया जाता है, जिससे वे मजबूरन चालान भर देते हैं। यह न केवल भ्रष्टाचार को बढ़ावा दे रहा है, बल्कि सड़क सुरक्षा को भी खतरे में डाल रहा है।

मुख्य बिंदु:

* ओवरलोड वाहनों की लोकेशन प्रदेश भर में उपलब्ध होने के बावजूद कोई कार्रवाई नहीं।

* गलत चालान का विरोध करने पर गाड़ी मालिकों को तंग किया जाता है।

* इससे सड़क दुर्घटनाओं का खतरा बढ़ रहा है।

अवैध पार्किंग का काला कारोबार: 100 रुपये प्रति टायर का शोषण आरटीओ द्वारा चालानित वाहनों को जिले के अवैध पार्किंग में खड़ा किया जाता है, जहां प्रति टायर 100 रुपये का मनमाना चार्ज वसूला जाता है। यह खुला लूट का खेल है, जो गाड़ी मालिकों को आर्थिक रूप से चूस रहा है।

सरकार को चेतावनी दी जाती है कि ऐसी अवैध पार्किंग तत्काल बंद की जाएं और सभी आरटीओ स्टॉप पर सख्त निगरानी रखी जाए।

मुख्य बिंदु:

* चालानित गाड़ियों पर अवैध पार्किंग चार्ज का बोझ।

* जिला स्तर पर पार्किंग व्यवस्था की कमी।

* निगरानी के अभाव में भ्रष्टाचार फल-फूल रहा है।

ट्रेक्टर-ट्रॉली का कमर्शियल दुरुपयोग: सड़क टैक्स चोरी और हादसों का कारण ट्रेक्टर-ट्रॉली ओवरलोड होकर भूसा, पराली ढोने का काम कर रहे हैं, लेकिन न तो सड़क टैक्स देते हैं और न ही टोल। ये 40 फीट लंबी अवैध ट्रॉली लेकर सड़कों पर घूम रहे हैं, जिससे हादसे हो रहे हैं। यदि ये वाहन कमर्शियल काम करते हैं, तो इन्हें कमर्शियल रजिस्ट्रेशन अनिवार्य किया जाए। ट्रेक्टर की हॉर्सपावर के आधार पर 3 टन तक वजन ढोने की सीमा तय हो और ट्रॉली की लंबाई 12 फुट तक सीमित रहे।

मुख्य बिंदु:

* ट्रेक्टर-ट्रॉली विक्रेता, मिल मालिक और ठेकेदार किसानों को बदनाम कर रहे हैं।

* प्रदेश भर में हजारों ऐसी ट्रॉली बिना अंकुश के चल रही हैं।

हाईकोर्ट के आदेश की अवहेलना हो रही है; प्रशासन निष्क्रिय।

सरकार से अपील: सख्त कार्रवाई या फिर ट्रेक्टर-ट्रॉली की बाढ़?

प्रदेश सरकार से अपील है कि ट्रेक्टर-ट्रॉली पर तत्काल अंकुश लगाया जाए।

हम किसान भी हैं और गाड़ी मालिक भी।

एक लोकल कमर्शियल गाड़ी से सरकार को सालाना 5 लाख रुपये राजस्व मिलता है, लेकिन ट्रेक्टर-ट्रॉली इससे वंचित कर रही हैं। यदि कार्रवाई नहीं हुई, तो हम भी गाड़ियां बेचकर ट्रेक्टर-ट्रॉली बनाने को मजबूर होंगे।

बड़े नेताओं के संरक्षण में ये वाहन चल रहे हैं — अब समय आ गया है सख्ती का! प्रदेश सलाहकार राधेश्याम मलिक, बलराज शर्मा, प्रदेश उपाध्यक्ष सुरेश नियाना, बिजेंद्र सहारण, सचिव हरदीप सिंह, इंदरजीत मोंगा आदि की उपस्थिति में यह प्रस्ताव पारित।

अनुभवी एवं अप्रशिक्षित पत्रकारों के लिए विशेष आमंत्रण

यदि आप फील्ड में काम कर चुके हैं या करने के इच्छुक है, ज़मीनी पत्रकारिता का अनुभव रखते हैं, या करना चाहते हैं, और सच के साथ खड़े रहने का जज़्बा रखते हैं — तो यह संदेश आपके लिए है।

"परिवहन विशेष" हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषा में दैनिक प्रकाशित (आर. एन.आई. द्वारा मान्यता प्राप्त)
"परिवहन विशेष एवं न्यूज ट्रांसपोर्ट विशेष यू ट्यूब चैनल"

अपने विस्तार के तहत अनुभवी, इच्छुक और जिम्मेदार पत्रकारों को आमंत्रित करता है।

उपलब्ध दायित्व (अनुभव अनुसार):

* राष्ट्रीय / राज्य / जिला स्तर
* ब्यूरो प्रमुख
* सीनियर रिपोर्टर
* क्राइम रिपोर्टर / क्राइम हेड
* संपादकीय सहयोग

हम क्या देते हैं:

* अनुभव के अनुरूप जिम्मेदारी
* स्वतंत्र डिजिटल न्यूज़ प्लेटफॉर्म
* खबरों को प्राथमिकता देने वाला मंच
* सम्मान के साथ कार्य का अवसर

यह अवसर नए एवं अप्रशिक्षित दोनों के लिए है।

संपर्क करते समय भेजें:

* संक्षिप्त पत्रकारिता अनुभव
* मीडिया संस्थान का विवरण
* प्रेस / आधार आईडी

संपर्क:

संजय कुमार बाठला
प्रधान संपादक – परिवहन विशेष
व्हाट्सएप / फोन: 9811732095
ईमेल एड्रेस:- newstransportvishesh@gmail.com

अनुभव और इच्छाशक्ति अगर है, तो मंच मिलना चाहिए।
"परिवहन विशेष" आपके अनुभव और इच्छाओं का सम्मान करता है।

असली जागरूकता, सूझबूझ और कम्युनिटी स्पिरिट ऐसी ही दिखती है

संजय कुमार बाठला

ओट्टापलम, केरल — पलक्कड़ का एक छोटा सा शहर — लेकिन वहां जो हुआ वह क्राइसिस मैनेजमेंट में एक मास्टरक्लास था।

एक चलती बस में आग लग गई, और उसके बाद 60 सेकंड में लोगों की ज़बरदस्त बहादुरी का नज़ारा दिखा।

10वां सेकंड: बस के दरवाज़े खुले। पैसेंजर बाहर निकलने लगे।

30वां सेकंड: एक लोकल राहगीर आया — उसके पास रील रिकॉर्ड करने के लिए फ़ोन नहीं था, बल्कि एक फायर एक्सटिंग्विशर था।

35वां सेकंड: तीन से चार और लोग फायर एक्सटिंग्विशर लेकर दौड़े।

50वां सेकंड: हर एक पैसेंजर बस से उतर गया — सुरक्षित और बिना किसी नुकसान के।

60वां सेकंड: दिख रही आग बुझा दी गई।

और यह ध्यान दें: एक भी आदमी के हाथ में मोबाइल फ़ोन नहीं था।

असली जागरूकता, सूझबूझ और कम्युनिटी स्पिरिट ऐसी ही दिखती है।

सराय काले खां से पहली बार यात्रियों को लेकर दौड़ी नमो भारत, 82 किमी लंबी दिल्ली-मेरठ की दूरी तय की 60 मिनट में

दिल्ली। मेरठ में लोकार्पण के साथ ही रविवार को 82 किलोमीटर लंबे दिल्ली-मेरठ नमो भारत कॉरिडोर पर पहली बार परिचालन शुरू हुआ। सराय काले खां आरआरटीएस स्टेशन से शाम छह बजे यात्रियों को लेकर पहली नमो भारत ट्रेन मेरठ के लिए दौड़ी।

बुराड़ी के अमित प्रजापति ने लिया पहला टिकट : यात्रा के लिए काउंटर से पहला टिकट बुराड़ी के अमित प्रजापति ने लिया तो वहीं टिकट वेंडिंग मशीन से पहला टिकट परतापुर की सिद्धि ने निकाला। मेरठ के लिए ट्रेन चलते ही उत्साहित यात्री झूम उठे। इसी के साथ सराय काले खां से मोदीपुरम तक की यात्रा एक घंटे के भीतर पूरी हुई।

दिल्ली-मेरठ नमो कारिडोर का न्यू अशोक नगर से मेरठ साउथ नमो स्टेशन का करीब 55 किमी लंबा हिस्सा पहले से चालू था। सराय काले खां से न्यू अशोक नगर का करीब पांच किलोमीटर लंबा हिस्सा और मेरठ साउथ से मोदीपुरम के बीच 21 किलोमीटर का सेक्शन का प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सुबह उद्घाटन किया। इससे पहले तक मेरठ के लोगों को सड़क मार्ग से दिल्ली आने में ढाई से तीन घंटे लगते थे। वहीं अब एक तिहाई समय में ही लोग पहुंच सकेंगे। चिकित्सा, शिक्षा, रोजगार आदि के लिए दिल्ली आने व जाने कुल मिलाकर लगभग चार घंटे का समय बचेगा। इससे जहां जाम से राहत मिलेगी, वहीं सड़कों पर भीड़ न होने से दुर्घटनाओं में भी कमी आएगी और प्रदूषण भी घटेगा।

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत
https://tolwa.com/about.html | tolwaindia@gmail.com, tolwadelhi@gmail.com

पिंकी कुंडू

आज का साइबर सुरक्षा विचार: गुरुग्राम में महिला की गिरफ्तारी — चीन-आधारित साइबर धोखेबाज़ों की मदद करने के आरोप में

वह अपने पति के साथ किराए के मकान से एक वर्चुअल SIM बॉक्स चला रही थी।

- यह सेटअप अंतरराष्ट्रीय VoIP कॉल्स को स्थानीय नंबरों में बदल देता था, जिससे धोखेबाज़ अपनी पहचान छिपाकर भारतीय नागरिकों को निशाना बना पाते थे।

पहले भी गुरुग्राम और देश के अन्य स्थानों से SIM बॉक्स एक्सचेंज पकड़े गए हैं, जो डिजिटल अरेस्ट स्कैम और इन्वेस्टमेंट स्कैम करने का बड़ा जरिया बने।

आवश्यकता है कि स्थानीय पुलिस को प्रशिक्षित किया जाए ताकि वे ऐसे इंस्टॉलेशन की पहचान कर सकें और DoT को सिम बॉक्स के दुरुपयोग पर कड़ी निगरानी रखनी चाहिए।

दूरसंचार विभाग (DoT) सक्रिय रूप से AI-संचालित प्रणालियों का उपयोग कर रहा है ताकि साइबर धोखाधड़ी में इस्तेमाल होने वाले SIM बॉक्स एक्सचेंज का पता लगाया जा सके और उन्हें समाप्त किया जा सके, परंतु इसे और तेज़ गति देकर इन गतिविधियों में SIM बॉक्स का इस्तेमाल रोकना आवश्यक है।

AI कैसे SIM बॉक्स एक्सचेंज का पता लगाता है

1. कॉल पैटर्न विश्लेषण

- AI मॉडल बड़े पैमाने पर कॉल डिटेल रिकॉर्ड्स (CDRs) स्कैन करते हैं।

- असामान्यताओं का पता लगाते हैं जैसे:

- एक ही SIM से अचानक कॉल की संख्या बढ़ जाना।

- SIM द्वारा ऐसा ट्रैफिक उत्पन्न करना जो सामान्य मानव उपयोग से मेल नहीं खाता।

- VoIP गेटवे से शुरू होकर स्थानीय मोबाइल नंबर पर समाप्त होने वाली कॉल।

2. IMEI और डिवाइस फिंगरप्रिंटिंग

- SIM बॉक्स अक्सर एक डिवाइस में कई SIM का उपयोग करते हैं, जिससे पहचान आसान हो जाती है।

- AI असामान्य SIM गतिविधि को IMEI नंबर से जोड़ता है और उन डिवाइसों को चिन्हित करता है जो फोन की तरह नहीं बल्कि गेटवे की तरह काम करते हैं।

3. जियो-लोकेशन और टॉवर मैपिंग

- AI SIM के भौगोलिक स्थान की तुलना कॉल गंतव्य से करता है।

- उदाहरण: नागालैंड में पंजीकृत SIM जो लगातार गुरुग्राम टावरों से कॉल रूट करता है, उसे चिन्हित करना आसान होता है।

4. ट्रैफिक प्रोफाइलिंग

- वैध उपयोगकर्ता कॉल, SMS और डेटा का मिश्रित उपयोग दिखाते हैं।

- SIM बॉक्स उच्च मात्रा और समान प्रकार का कॉल ट्रैफिक दिखाते हैं।

- AI इन प्रोफाइलों को अलग करता है और प्रवर्तन टीमों को अलर्ट भेजता है।

5. क्रॉस-नेटवर्क कोरिलेशन

- DoT विभिन्न दूरसंचार ऑपरेटरों के डेटा को एकीकृत करता है।

- AI उन SIM समूहों की पहचान करता है जो एक साथ काम कर रहे होते हैं

(जैसे सैकड़ों कॉल एक साथ रूट होना), जो SIM बॉक्स संचालन की ओर संकेत करता है।

6. धोखाधड़ी का पता लगाने वाले अलर्ट

- एक बार चिन्हित होने पर, संदिग्ध SIM स्वतः ब्लॉक कर दिए जाते हैं।

- अलर्ट कानून प्रवर्तन और साइबर अपराध इकाइयों के साथ साझा किए जाते हैं ताकि छापेमारी और जब्ती की जा सके।

भारत में प्रवर्तन

- DoT ने दूरसंचार नेटवर्क को डिजिटल धोखाधड़ी के खिलाफ पहली रक्षा पंक्ति बना दिया है।

- AI का उपयोग कर अवैध SIM उपयोग और VoIP मास्किंग का पता लगाया जा रहा है।

- ये उपाय लाइसेंस प्राप्त सेवा क्षेत्रों (LSAs) और पुलिस एजेंसियों के साथ मिलकर SIM बॉक्स रैकेट को खत्म करने के लिए लागू किए जाते हैं।

निष्कर्ष:

AI DoT को SIM बॉक्स एक्सचेंज का पता लगाने में मदद करता है, कॉल रिकॉर्ड, डिवाइस फिंगरप्रिंट, जियो-लोकेशन असंगतियों और ट्रैफिक पैटर्न का विश्लेषण करके। यह सक्रिय पहचान अधिकारियों को धोखाधड़ी वाले SIM ब्लॉक करने और सीमा-पार साइबर अपराध नेटवर्क को समाप्त करने में सक्षम बनाती है।

कानून प्रवर्तन एजेंसियों, DoT और आम नागरिकों को मिलकर SIM बॉक्स से कॉल रूटिंग के खिलाफ एकजुट होकर इसे खत्म करना चाहिए।

बिना मेकअप के खूबसूरती : शहनाज़ हुसैन

क्या आप सुंदर दिखने के लिए हर सुबह कई मेकअप प्रोडक्ट्स लगाकर थक गई हैं?

क्या हमें सच में मेकअप और कॉस्मेटिक की दुनिया के सबसे हॉट ट्रेंड के आगे झुकना होगा और उसका गुलाम बनना होगा? या क्या कोई ऐसा तरीका है जिससे हम क्रीम की लेयर पर लेयर लगाए बिना बेहतर महसूस कर सकें?

ऐसे भी मौके आते हैं जब आपको बिना मेकअप के रहना पड़ता है। विंग्ड-टिप लाइनर और कंटूर के साथ फुल-ऑन मेकअप के साथ कौन तैरता है?

चलिए मान लेते हैं, आप हर समय मेकअप नहीं लगा सकतीं।

तो अपनी स्किन पर थोड़ा मेकअप लगाने के तरीके ढूंढने के बजाय, क्यों न अपनी स्किन की क्वालिटी को बेहतर बनाया जाए और बिना मेकअप के भी सुंदर दिखने के दूसरे तरीके खोजे जाएं?

जब आप कुछ समय के लिए बिना मेकअप के रहती हैं, तो आप अपनी स्किन को सांस लेने का मौका देती हैं।

अगर आप हर दिन घंटों आईने के सामने बिताए बिना अच्छी दिखना चाहती हैं, तो अपनी स्किन को ब्रेक देने का समय आ गया है।

तो, यहां हम आपके लिए बिना किसी मेकअप के अपने लुक को बेहतर बनाने के नेचुरल तरीके लाए हैं।

आपको अपनी डाइट, अपनी आदतों, अपनी लाइफस्टाइल और अपने स्किनकेयर रूटीन की ज़रूरी बातों का ध्यान रखना होगा।

अपना चेहरा दिन में दो बार धोएं। बिना मेकअप के अच्छा दिखने के लिए स्किनकेयर एक ज़रूरी चीज़ है। अपनी स्किन को दिन में दो बार धोएं, बेहतर होगा कि सुबह और रात को सोते समय अपनी स्किन के टाइप के हिसाब से हर्बल फेशियल से धोएं ताकि धूल और पॉल्यूटेंट निकल जाएं।

ज़्यादा धोने से आपकी स्किन ड्राई और इरिटेट हो सकती है, जिससे यह बेहतर दिखने के बजाय और खराब दिखने लगती है। अपने चेहरे के लिए एक स्किन रूटीन बनाएं और उस पर टिके रहें। हेल्दी स्किन के लिए क्लींजिंग, टोनिंग और मॉइस्चराइजिंग वाला CTM रूटीन ज़रूरी है।

हर दूसरे दिन एक अच्छा फेशियल मसाज फाइन लाइन्स को कम कर सकता है, आपकी स्किन को टाइट कर सकता है और इसे ज़्यादा चमकदार बना सकता है। इसके अलावा, यह आपको स्ट्रेस से भी राहत और तरोताज़ा महसूस कराता है।

फेस पैक स्किन केयर में ज़रूरी भूमिका निभाते हैं क्योंकि वे न्यूट्रिएंट्स, मॉइस्चराइज़र, विटामिन और मिनरल्स से भरपूर होते हैं जो स्किन के लिए फायदेमंद होते हैं।

पैक का रेगुलर इस्तेमाल आपकी स्किन को मास्क को सोखने देता है, जिससे आप इंग्रीडिएंट्स में मौजूद सभी अच्छाइयों को एब्ज़ॉर्ब कर पाते हैं और आपको ग्लोइंग और जवां लुक पाने और एजिंग साइन्स को देर से दिखाने में मदद मिलती है।

अपनी स्किन टाइप के हिसाब से, अपनी ज़रूरत के हिसाब से मास्क तैयार करें, इसे लगाएं और आराम करें! आप शहद, एलोवेरा, बेसन, दही, ओटमील और फलों जैसी इंग्रीडिएंट्स का इस्तेमाल कर सकते हैं, क्योंकि ये होममेड मास्क के लिए कुछ बहुत पॉपुलर ऑप्शन हैं।

आप जिस तरह का मास्क इस्तेमाल करते हैं, उसके आधार पर, कुछ मास्क गंदगी निकालने, आपकी स्किन को हाइड्रेट करने या आपकी स्किन को फील-गुड न्यूट्रिएंट्स की मेगा डोज़ देने के लिए डिज़ाइन किए गए हैं।

अच्छा खाएं ------- एक हेल्दी डाइट बहुत ज़रूरी है। हेल्दी दिखना और महसूस करना इस बात पर बहुत कुछ निर्भर करता है कि आप अपने शरीर में क्या लेते हैं। स्किन। आपकी स्किन के मेंटेनेंस और रिपेयर के लिए प्रोटीन और विटामिन का भरपूर सेवन बहुत ज़रूरी है। अपनी डाइट में ताज़े फल और सब्ज़ियां शामिल करें और अपनी स्किन को नरिश्ड और हाइड्रेटेड रखने के लिए दिन भर खूब पानी पिएं। प्यास लगने पर, फलों के साथ ठंडा और ताज़ा पानी का एक गिलास पिएं या पानी से भरपूर फल और सब्ज़ियां, जैसे तरबूज और खीरा, ज़्यादा खाने की कोशिश करें।

हम सांस लेने, पसीना बहाने, पेशाब करने और डाइजेशन से पानी खो देते हैं, इसलिए यह ज़रूरी है कि हम इस्तेमाल किए गए पानी को फिर से हाइड्रेट करें और उसकी भरपाई करें।

हमारा शरीर पानी का इस्तेमाल शरीर के टेम्परेचर को रेगुलेट करने और शरीर

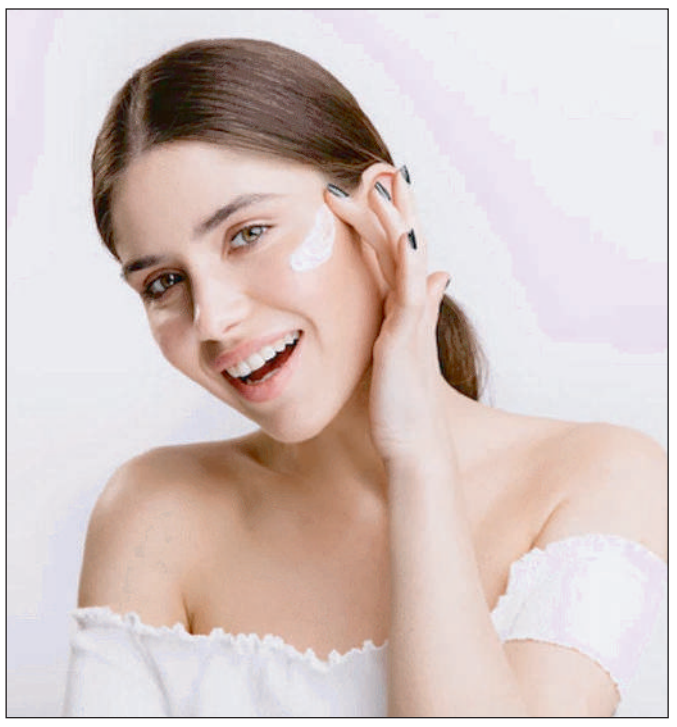

के दूसरे काम करने में मदद के लिए करता है।

ज़्यादातर लोग कार्बोनेटेड ड्रिंक या चीनी वाले आर्टिफिशियल जूस पीना पसंद करते हैं। हालांकि इसमें पानी तो होता ही है, लेकिन इसमें दूसरी चीज़ें भी होती हैं जो हमारे लिए हेल्दी नहीं हो सकती हैं।

अगर आपको लगता है कि आपकी रोज़ की ज़रूरतें सिर्फ़ आपकी डाइट से पूरी नहीं हो रही हैं, तो विटामिन सप्लीमेंट लें। विटामिन A, C, और E स्किन के लिए खास तौर पर फायदेमंद होते हैं। जितना हो सके चिकनाई वाली, फैटी, मीठी चीज़ें कम करने की कोशिश करें और इसकी जगह फल, सब्ज़ियां, साबुत अनाज और लीन मीट ज़्यादा खाएं।

स्किन केयर में क्या करें और क्या न करें, यह ध्यान में रखना चाहिए।

रात में क्लींजिंग ज़रूरी है, ताकि दिन में स्किन पर जमी गंदगी, पॉल्यूटेंट, बासी पसीना, तेल, डेड स्किन सेल्स और मेकअप हट जाए।

अपनी स्किन को ब्रॉड-स्पेक्ट्रम सनस्क्रीन से ज़रूर बचाएं। धूप में निकलने से 20 मिनट पहले सनस्क्रीन लगाएं। अगर आप एक घंटे से ज़्यादा धूप में हैं, तो सनस्क्रीन दोबारा लगाएं। ज़्यादातर स्किन के लिए SPF 20 वाला सनस्क्रीन काफी होता है। सेंसिटिव स्किन जो आसानी से जल जाती है, उसके लिए ज़्यादा SPF वाला सनस्क्रीन इस्तेमाल करें।

स्क्रब का इस्तेमाल स्किन केयर का एक ज़रूरी हिस्सा है। यह डेड स्किन सेल्स को हटाने, पोर्स को खोलने और स्किन को चमकदार बनाने में मदद करता है।

मॉइस्चर स्किन को सॉफ्ट, स्मूद, कोमल और जवां बनाए रखने में मदद करता है। मॉइस्चराइज़र लिक्विड और क्रीम दोनों तरह के मिलते हैं। ड्राई स्किन के लिए, क्रीमी मॉइस्चराइज़र का इस्तेमाल करें। इसे मेकअप के नीचे भी लगाना चाहिए।

नॉर्मल से ड्राई स्किन के लिए नरिशिंग ज़रूरी है। यह स्किन को लुब्रिकेटेड और सॉफ्ट रखने में मदद करता है, ताकि यह नमी बनाए रख सके। रात में स्किन को साफ करने के बाद, नरिशिंग क्रीम लगाएं और स्किन पर 2 से 3 मिनट तक मसाज करें। गीले कॉटन वूल से पोंछ लें।

क्या न करें

चेहरे को दिन में 2 या 3 बार से ज़्यादा साबुन और पानी से न धोएं। एल्कलाइन साबुन नॉर्मल pH बैलेंस को बिगाड़ सकते हैं और स्किन पर मुंहासे होने का खतरा बना सकते हैं।

ऑयली स्किन पर हैवी मॉइस्चराइज़र लगाने से बचें क्योंकि इससे पोर्स बंद हो सकते हैं, जिससे ब्लैकहेड्स और मुंहासे हो सकते हैं। ऑयली स्किन के लिए, 100 ml गुलाब जल में एक चम्मच प्योर ग्लिसरीन मिलाएं। इसे फ्रिज में एक एयरटाइट बोतल में रखें। नॉर्मल से ऑयली और कॉम्बिनेशन स्किन को मॉइस्चराइज़ करने के लिए यह लोशन लगाएं।

पिंपल्स, एक्ने या रैश वाली स्किन पर फेशियल स्क्रब न लगाएं। ब्लैकहेड्स और पिंपल्स को न तो दबाएं और न ही दबाएं।

मेकअप हटाते समय आंखों के आसपास की स्किन को न खींचें और न ही खींचें। आंखों के आस-पास स्क्रब और मास्क नहीं लगाने चाहिए। अंडर-आई क्रीम को रात भर लगाकर न छोड़ें। 15 मिनट बाद गीले कॉटन वूल से उन्हें धीरे से हटा दें। इसे पूरी रात लगा रहने देने से सूजन आ सकती है।

पिछले कुछ दशकों में सुंदरता के कॉन्सेप्ट में सच में बदलाव आया है। ऊपरी ट्रीटमेंट से ज़्यादा ज़ोर अब ज़्यादा पॉज़िटिव नज़रिए पर आ गया है, जिसका मकसद स्किन की नैचुरल सुंदरता को बचाना और बनाए रखना है। आजमाए हुए और परखे हुए आयुर्वेदिक सिस्टम पर आधारित नैचुरल चीज़ों से स्किनकेयर में नुकसानदायक साइड इफ़ेक्ट और जलन पैदा करने वाले रिएक्शन बिल्कुल नहीं होते। सच में, नेचर न सिर्फ़ एक एक्सपर्ट केमिस्ट है, बल्कि सबसे अच्छी कॉस्मेटोलॉजिस्ट भी है।

सर्वाइकल स्पोंडिलोसिस

पिंकी कुंडू

आजकल की बिज़ी लाइफस्टाइल में गर्दन का दर्द एक बहुत आम प्रॉब्लम बन गई है।

घंटों मोबाइल और लैपटॉप इस्तेमाल करने से यह प्रॉब्लम बढ़ जाती है।

मुख्य लक्षण

1. गर्दन में अकड़न और भारीपन
2. कंधे और उंगलियों तक दर्द
3. हाथों में झुनझुनी या सुन्नपन
4. चक्कर आना या सिरदर्द

***मुख्य कारण**

1. गलत पोस्चर
2. बहुत ऊंचा/सख्त तकिया
3. बढ़ती उम्र के साथ हड्डियों का कमज़ोर होना
4. एक्सरसाइज़ की कमी

घरेलू नुस्खे (राहत के टिप्स)

1. हॉट शेक – मांसपेशियों का

तनाव कम करें

2. गर्दन की हल्की एक्सरसाइज़ – तब करें जब ज़्यादा दर्द न हो

3. हर 30-40 मिनट में ब्रेक लें – स्क्रीन से दूर हट जाएं

सही तकिया इस्तेमाल करें – मीडियम ऊंचाई का और मुलायम

डॉक्टर से कब सलाह लें?

1. आपको अपने हाथों में कमज़ोरी महसूस हो सकती है

14 - दिन की संपूर्ण परिवर्तन - योजना

विषय: 12 Stumbling Blocks (12 अवरोध) और उनसे मुक्ति का 14 - दिन का सफर

उद्देश्य:

1. आज्ञाकारिता, स्पष्टता, संयम, पवित्रता, सत्यता और लक्ष्योन्मुख जीवन को विकसित करना

२. उन 12 अवरोधों को तोड़ना जो मनुष्य को उसकी नियत मंज़िल (Destiny/Throne) से भटकाते हैं।

WEEK 1 – आंतरिक अनुशासन (Inner Discipline)

दिन 1 – अनाज्ञाकारिता (Disobedience) को तोड़ना

आज का अभ्यास: "हर छोटी बात में नियमों का सम्मान।"

करना क्या है? आज अपने दिन में 3 छोटी आज्ञाकारिता चुनौतियाँ रखें:

समय का पालन

कार्य का पालन

प्रतिबद्धता का पालन

आज का मंत्र:

"मैं छोटी बातों में भी अनुशासन रखूँगा/रखूँगी।"

दिन २ – द्विविधता (Double-Mindedness) मिटाना

सुबह 10 मिनट: एक ही लक्ष्य चुनें और लिखें: "मैं आज किस बात में स्पष्ट रहूँगा/रहूँगी?"

पूरा दिन:

एक निर्णय पर टिके रहें।

बार-बार दिशा बदलने से बचें।

आज का मंत्र:

"मैं आज एक दिशा में स्थिर रहूँगा/रहूँगी।"

दिन ३ – *भटकाने वाली इच्छाओं (Distracting Desires) पर नियंत्रण

करना क्या है?* अपने जीवन के 3 बड़े distractions पहचानें:

मोबाइल

भोजन

लोगों की राय

आलस्य

अनावश्यक बातें

१-घंटे का नियम:

हर distraction के लिए रोज़ १ घंटे का अनुशासन - समय रखें (उस समय उसे छूना भी नहीं)।

आज का मंत्र:

"मैं अपने मन का मालिक हूँ, मन मेरा मालिक नहीं।"

दिन 4 – ज़िद/विद्रोही भाव (Defiant Spirit) घिघलाना

आज का अभ्यास:

किसी भी बातचीत में पहले 10 सेकंड सिर्फ सुनें।

आज "मैं सही हूँ" से ज़्यादा "मैं समझ रहा हूँ" चुनें।

आज का मंत्र:

"मैं जीतने नहीं, समझने आया हूँ।"

दिन 5 – मानसिक/आत्मिक अपवित्रता (Defilement) हटाना

आज का नियम:

आज कोई नकारात्मक कंटेंट नहीं — न पढ़ें

न देखें

न सुनें

न फैलाएँ

शाम को:

10 मिनट शांति-ध्यान (Silence + Reflection)

आज का मंत्र:

"मैं अपने मन को पवित्र रखूँगा/रखूँगी।"

दिन 6 – सुस्ती/आलस्य (Dullness) से बाहर आना

सुबह का अभ्यास:

5 मिनट स्ट्रेचिंग

5 मिनट दिन का रिव्यू

आज का लक्ष्य:

एक ऐसा काम चुनें जिसे आप टालते थे — और आज इसे पूरा करके ही सोएँ।

आज का मंत्र:

"आज मैं टालूँगा नहीं—पूरा करूँगा।"

दिन 7 – कलह (Discord) से सौहार्द की ओर

आज का नियम:

किसी से भी बहस नहीं

कटु प्रतिक्रिया नहीं

ऊँची आवाज़ नहीं

आज एक healing line बोलें:

"आपकी बात मेरे लिए महत्वपूर्ण है।"

आज का मंत्र:

"मैं शांति का वाहक हूँ।"

WEEK २ – बाहरी व्यवहार सुधार (Outer Transformation)

दिन 8 – धोखा/आत्म-धोखा (Deception) समाप्त करना

आज का नियम:

सिर्फ सच्चाई

कोई बहाना नहीं

कोई बढ़ा-चढ़ाकर नहीं

शाम को लिखें:

"आज मन ने कहाँ बहाना बनाने की कोशिश की?"

आज का मंत्र:

"मैं सत्य से मुक्त होता हूँ।"

दिन 9 – पीछे हटना/हार मानना (Drawing Back) रोकना

आज का अभ्यास:

कठिन काम के लिए 25 मिनट का नियम

(बिना रुके, बिना भागे)

आज का नियम:

"मैं कोशिश करूँगा, भागूँगा नहीं।"

दिन 10 – इनकार (Denial) खत्म करना

आज का अभ्यास:

एक सच्चाई स्वीकारें जिससे आप भाग रहे थे:

स्वास्थ्य

वित्त

संबंध

आदतें

फिर लिखें:

उसके समाधान के 3 कदम

आज का मंत्र:

"मैं सच से भागूँगा नहीं—सच को अपनाऊँगा।"

दिन 11 – गिरावट (Declension) उलटना

आज लिखें:

जीवन के 3 क्षेत्र जहाँ आप पहले बेहतर थे:

पढ़ाई/रीडिंग

स्वास्थ्य/वर्कआउट

ध्यान/प्रार्थना

समय की पाबंदी

आज:

उनमें से कम से कम 1 चीज़ को restore करें।

आज का मंत्र:

"मैं गिरता नहीं—मैं लौटता हूँ।"

दिन 12 – भ्रमित करने वाले विचार (Deceptive Doctrine) हटाना

आज का नियम:

कोई भी धारणा बिना प्रमाण स्वीकार नहीं करनी।

हर विचार पर 3 प्रश्न:

क्या यह सत्य है?

क्या यह उपयोगी है?

क्या यह मुझे उन्नत करता है?

आज का मंत्र:

"मैं सत्य चुनता हूँ, भ्रम नहीं।"

दिन 13 – पुनर्स्थापन दिवस (Restoration Day)

आज का दिन मरम्मत का है।

आज 3 काम ज़रूर करें:

जहाँ गलती हुई—स्वीकारें

जहाँ बिखराव हुआ—सुधारें

जहाँ दूरी आई—जुड़ें

एक healing call या संदेश ज़रूर करें।

आज का मंत्र:

"मैं टूटे को जोड़ता हूँ।"

दिन 14 – नियत मंज़िल से संरेखण (Destiny Alignment Day)

आज 14 दिन का सार निकालिए।

लिखकर जवाब दें:

कौन सा ब्लाक (block) सबसे ज्यादा कमज़ोर हुआ?

किस आदत में सबसे बड़ा परिवर्तन आया?

आगे के अगले 14 दिन में आप किस ब्लाक (block) पर गहराई से काम करेंगे?

आज का मंत्र:

"मैं अपनी मंज़िल के लिए संरेखित हूँ।"

* यह 14 - दिन की योजना आपकी सोच, व्यवहार और आध्यात्मिक दिशा — तीनों को पुनर्संगठित करती है।

बारह "Stumbling blocks" (अवरोध)

ये सभी आत्म-प्रगति, आध्यात्मिक विकास और जीवन के लक्ष्यों की ओर अग्रसरता में बाधक होते हैं। नीचे हर एक का अर्थ, जीवन में कैसे प्रकट होता है, उसके निहित परिणाम और उसे दूर करने के व्यावहारिक व आध्यात्मिक उपाय दिए जा रहे हैं।

1) अवज्ञा (Disobedience)

अर्थः नियमों, उच्च सत्य, गुरु/अनुभवी मार्गदर्शक या अपनी अंतरात्मा की आवाज़ का न मानना।

प्रकट होनाः सलाह न सुनना, अनुशासन तोड़ना, झटपट परिणाम चाहिए होना।

प्रभावः सीखने और परिपक्वता के अवसर खो जाते हैं; संबंध और करियर को नुकसान; आत्म-नियमन घटता है।

उपायः छोटे अनुशासन से शुरू करें (समय पर उठना, वादा निभाना)। गुरु/अनुभवियों की सकारात्मक सलाह को परीक्षण के साथ अपनाएँ। आत्म-निरीक्षण (journaling) और नियमों का लक्ष्य-आधारित आवेदन करें।

2) द्विधा/दो-मन (Double-minded)

अर्थः एक साथ दो दिशाओं में झूलना — दृढ़ निश्चय का अभाव।

प्रकट होनाः योजनाएँ बार-बार बदलना, निर्णय टालना, "हाँ पर भी और नहीं पर भी" मन।

प्रभावः ऊर्जा बिखरती है; प्रगति धीमी या झटपट रुक जाती है; आत्म-विश्वास कम होता है।

उपायः प्राथमिकता तय करें; छोटे निर्णयों से आत्मविश्वास बनाएं; निर्णय लेने के बाद 30–90 दिन का नियम अपनाएँ — इस दौरान उस निर्णय के लाभ/हानि पर समीक्षा करें। ध्यान (meditation) से मन की स्थिरता बढ़ाएँ।

3) मनोहर इच्छाएँ (Distracting-desires)

अर्थः क्षणिक आकर्षण/लालसाओं के पीछे भागना जो लक्ष्य से भटका दें।

प्रकट होनाः सोशल मीडिया पर समय बर्बाद करना, फालतू खरीदारी, अस्वास्थ्यकर आदतें।

प्रभावः समय व संसाधन का अपव्यय; दीर्घकालीन लक्ष्य धीमे पड़ते हैं; मानसिक शान्ति घटती है।

उपायः इच्छाओं का मानचित्र बनाएं — किसे तुरंत रोकना है, किनको नियंत्रित करना है। "यदि — तो" नियम बनाइए (e.g., अगर काम पूरा हुआ तभी मनोरंजन)। छोटे-छोटे इनाम (rewards) से विवेकपूर्ण संतुष्टि दें।

4) विद्रोही स्वभाव (Defiant)

अर्थः सकारात्मक परामर्श का विरोध, जानबूझकर चुनौती देना या अहंकार से विरोध करना।

प्रकट होनाः हर बात पर बहस, नियमों को चुनौती, रिश्तों में तनाव।

प्रभावः सहायता खोना; अवसरों का निषेध; अकेलापन और संघर्ष।

उपायः अहंकार की पहचान करें — बहस से पहले 10 सेकंड ठहरें, प्रश्न करने का उद्देश्य बदलें: "मैं जीतना चाहता/चाहती हूँ" → "मैं समझना चाहता/चाहती हूँ"। विनम्रता का अभ्यास करें।

5) अपवित्रता (Defilement)

अर्थः मन, वचन और कर्म का दूषित होना — अनैतिकता, नकारात्मकता, अस्वास्थ्यकर बातें।

प्रकट होनाः झूठ, नफरत, ईर्ष्या, अस्वास्थ्यकर संबंध, आत्म-घृणा।

प्रभावः आत्म-सम्मान गिरता है; कर्मों के नकारात्मक प्रभाव; शरीरिक व मानसिक रोग।

उपायः स्व-अनुशासन, क्षमाशीलता, नैतिकता पर दृढ़ता। रोज़ आत्म-परीक्षाः क्या मेरा कर्म शुद्ध है? साधारण आध्यात्मिक अभ्यास (प्रार्थना, जप, सत्संग) मदद करता है।

6) मन्दता/अवसाद (Dullness)

अर्थः चेतना का सुस्त होना — मानसिक सुस्ती, आँखें/मन भारी महसूस होना।

प्रकट होनाः आलस्य, ध्यान न टिकना, सृजनात्मकता की कमी।

प्रभावः अध्ययन/काम में गिरावट; लक्ष्य से धीरे-धीरे हटना; स्वास्थ्य पर नकारात्मक असर।

उपायः नियमित व्यायाम, नींद का संतुलन, पौष्टिक आहार; ब्रेक्स में सक्रियता (हैवी थिंकिंग के बाद हल्की सैर)। ब्रह्ममuhurta या सुबह की तरोताजा प्रैक्टिस जब संभव हो। मन को प्रोत्साहित करने के लिए छोटा लक्ष्य सेट करें।

7) वैमनस्य/कलह (Discord)

अर्थः लोगों के बीच झगड़ा, असहमति और विभाजन।

प्रकट होनाः टीम में तालमेल न रहना, पारिवारिक झगड़े, कार्यालय में तनाव।

प्रभावः सहयोग टूटता है; संसाधनों की बरबादी; मानसिक दबाव बढ़ता है।

उपायः संवाद कला (active listening) सीखें; विवाद में जीत से ज़्यादा समाधान पर ध्यान दें; माफ़ करना और बीच का रास्ता खोजें। समूह के लक्ष्यों को बार-बार स्पष्ट करें।

8) कपट/छल (Deception)

अर्थः दूसरों या स्वयं के प्रति असत्य बोलना/प्रवृत्ति।

प्रकट होनाः झूठ बोलना, दिखावा, वास्तविकता से भागना।

प्रभावः भरोसा टूटता है; संबंध विघटित होते हैं; नैतिक पतन।

उपायः सच्चाई को छोटी-छोटी बातों से आत्मसात करें; 'सत्य बोलने' का अभ्यास; स्वयं से ईमानदारी — अपने कारणों को स्वीकारें। मन का शुद्धिकरण करें।

9) पीछे हटना (Drawing-back)

अर्थः भय, असमर्थता या निश्चय की कमी से पीछे हट जाना — आध्यात्मिक या व्यवहारिक मैदान छोड़ देना।

प्रकट होनाः मुश्किल समय में प्रयास बंद कर देना; संकट आते ही हार मान लेना।

प्रभावः अवसरों का नष्ट होना; आत्म-विश्वास का ह्रास।

उपायः असफलता के भय का विश्लेषण करें; छोटे-छोटे कदम लें; समर्थन प्रणाली (mentor, मित्र) रखें। विफलता को सीख मानकर पुनः प्रयत्न की आदत डालें।

10) अस्वीकार (Denial)

अर्थः सच को न स्वीकारना — समस्याओं, दोषों या परिस्थितियों को नज़रअंदाज़ करना।

प्रकट होनाः स्वास्थ्य समस्या न देखते रहना; वित्तीय जोखिम न मानना; रिश्तों की टूटन का इनकार।

प्रभावः समय रहते उपाय न होने पर समस्या बढ़ जाती है; बड़े नुकसान।

उपायः सच्चाई का सामना करने की क्षमता विकसित करें; डेटा/साक्ष्य पर विचार करें; आत्म-साक्षात्कार करें। स्वीकार करने के बाद समाधान पर ध्यान दें।

11) पतन/अवनति (Declension)

अर्थः पहले जो ऊपर था उसका धीरे-धीरे गिरना — गिरावट की प्रक्रिया।

प्रकट होनाः प्रतिभा का दंश, आध्यात्मिक जीवन में ज़रा-ज़रा करके रोड़ा आना।

प्रभावः खोई हुई प्रतिष्ठा, मानसिक पीड़ा, जीवन स्तर में गिरावट।

उपायः नियमित आत्म-निरीक्षण; गिरावट की शुरुआती चेतावनियों पर कार्रवाई; नित्य नियम (sadhana) और अपने मूल सिद्धांतों पर लौटें। छोटी चीज़ों में अनुशासन बनाएं।

12) भ्रमक उपदेश/झूठी शिक्षाएँ (Deceptive-doctrine)

अर्थः गलत या संदिग्ध सिद्धांतों को सत्य मान लेना—फर्जी गुरुओं या आध्यात्मिक shortcuts।

प्रकट होनाः संदिग्ध शिक्षकों की अंध श्रद्धा; quick-fix सोच; कट्टरता या अंध विश्वास।

प्रभावः समय/धन/आत्मिक ऊर्जा की बर्बादी; गुमराह होना; वास्तविक उन्नति में बाधा।

उपायः शिक्षक/सूत्रों का विवेकपूर्ण परीक्षण करें — तर्क, अनुभव और फल (fruits) देखें। मूल ग्रंथों तथा प्रमाणित साधकों से मार्गदर्शन लें। स्वविवेक का विकास आवश्यक है।

समेकित सुझाव (सभी अवरोधों के लिए)

1. स्व-ज्ञानः रोज़ 10–15 मिनट का आत्म-निरीक्षण — कहाँ फँसा हूँ, क्यों?

2. नियमित साधनाः प्रार्थना, ध्यान, व्रत, सांस अभ्यास — मन को नियंत्रित करता है।

3. लघु लक्ष्य + पुरस्कारः लक्ष्य को टुकड़ों में बाँटिए और हर छोटे लक्ष्य पर खुद को प्रोत्साहित करें।

4. सहयोगः गुरु, मित्र, अच्छा परिवेश — ये चारों बोझ हल्के कर देते हैं।

5. निरन्तर सीखनाः गलतियों से सीखें, आत्म-क्षमाशीलता रखें पर सुधार न भूलें।

याद रखें — आपका दृढ़ संकल्प ही आपकी किनारी से सिंहासन तक की राह तय करेगा।

मास्टर नंबर अंक ज्योतिष में (11, 22, 33)

साप्ताहिकी अंकशास्त्र

डॉ. पूजाप्रसुन एन
गोल्ड मेडलिस्ट
09599101326, 07303855446

भाग्य, कर्म और आध्यात्मिक उत्क्रांति का उच्च सप्तक: अंक ज्योतिष में प्रत्येक अंक एक स्पंदन (वाइब्रेशन) वहन करता है — किंतु मास्टर नंबर तीव्र, सशक्त और आध्यात्मिक ऊर्जा से परिपूर्ण होते हैं। ये साधारण अंक नहीं हैं। इन्हें एकल अंकों का उच्च सप्तक (Higher Octave) माना जाता है। प्रमुख मास्टर नंबर हैं: 11 (2 का उच्च कंपन), 22 (4 का उच्च कंपन), 33 (6 का उच्च कंपन)। कुछ आधुनिक अंक ज्योतिषी 44, 55, 66, 77, 88, 99 को भी सम्मिलित करते हैं, परंतु पारंपरिक अंक ज्योतिष में 11, 22 और 33 को ही सर्वाधिक मान्यता प्राप्त मास्टर नंबर माना जाता है।

किसी अंक को "मास्टर" क्या बनाता है? मास्टर नंबर द्वि-अंकीय पुनरावृत्ति होते हैं (11, 22, 33)। सामान्यतः गणना में इन्हें एकल अंक में नहीं घटाया जाता (जब तक ऊर्जा असंतुलित न हो)। ये अत्यंत गहन आध्यात्मिक उत्तरदायित्व वहन करते हैं और महान संभावना के साथ महान संघर्ष भी लाते हैं। इन्हें आध्यात्मिक त्वरक (Spiritual Accelerators), कर्म तीव्रकारक (Karmic Intensifiers) और भाग्य गुणक (Destiny Multipliers) कहा जाता है। ये सफलता का वादा नहीं करते — ये उत्क्रांति की मांग करते हैं, और वही उत्क्रांति अंततः सफलता की ओर ले जाती है।

कुंडली में मास्टर नंबर लाइफ पाथ नंबर, डेस्टिनी/एक्सप्रेशन नंबर, सोल अर्ज नंबर, पर्सनैलिटी नंबर, पिनैकल नंबर और मैच्योरिटी नंबर में प्रकट हो सकते हैं। यदि एक से अधिक मास्टर नंबर हों, तो जीवन अत्यंत कर्मप्रधान और आध्यात्मिक रूप से संचालित हो जाता है।

मास्टर नंबर 11: आध्यात्मिक संदेशवाहक – अंतर्ज्ञानी दृष्टा। 11 = 1+1 = 2 (2 का उच्च कंपन)। जहाँ 2 सामंजस्य और सहयोग का प्रतीक है, वहीं 11 आध्यात्मिक प्रकाश और सूक्ष्म संवेदनशीलता का प्रतिनिधित्व करता है। प्रमुख शब्द: अंतर्ज्ञान, प्रेरणा, तंत्रिका ऊर्जा, प्रबोधन, आध्यात्मिक जागरूकता, संवेदनशीलता, दिव्य माध्यम। 11 को प्रकाशदाता, मनोवैज्ञानिक/आध्यात्मिक अंक और दिव्य चैनल कहा जाता है। सकारात्मक गुण: अत्यंत अंतर्ज्ञानी, गहरी सहानुभूति, रचनात्मक दृष्टा, आध्यात्मिक संवेदनशीलता, प्राकृतिक मार्गदर्शक। नकारात्मक पक्ष: चिंता, मानसिक तनाव, अत्यधिक चिंतन, भावनात्मक अस्थिरता, उत्तरदायित्व का भय। जीवन पाठ: भावनाओं पर नियंत्रण, अंतर्ज्ञान पर विश्वास, मानवता की सेवा, पलायनवाद से बचाव। उपयुक्त क्षेत्र: आध्यात्मिक शिक्षण, उपचार कला, लेखन, काव्य, प्रेरक वक्तृत्व, परामर्श, ज्योतिष, गूढ़ विद्या।

मास्टर नंबर 22: मास्टर बिल्डर – यथार्थ का वास्तुकार। 22 = 2+2 = 4 (4 का उच्च कंपन)। जहाँ 4 संरचना बनाता है, वहीं 22 विश्व-परिवर्तनकारी प्रणालियाँ निर्मित करता है। प्रमुख शब्द: व्यावहारिक दृष्टा, प्रणाली निर्माता, अनुशासन, शक्ति, अभिव्यक्ति। इसे मास्टर बिल्डर और दूरदर्शी वास्तुकार कहा जाता है। सकारात्मक गुण: रणनीतिक चिंतक, दीर्घकालिक योजनाकार, सशक्त नेतृत्व, वित्तीय बुद्धिमत्ता, संगठनात्मक कौशल। नकारात्मक पक्ष: अत्यधिक कार्यभार, दबाव, नियंत्रण प्रवृत्ति, असफलता का भय, कार्यपिपासु स्वभाव। जीवन पाठ: भौतिक-आध्यात्मिक संतुलन, अहंकार से बचाव, शक्ति का नैतिक उपयोग, सामूहिक हित हेतु निर्माण। उपयुक्त क्षेत्र: व्यापारिक साम्राज्य, वास्तुकला, राजनीति, अभियांत्रिकी, राष्ट्र निर्माण, संस्थागत नेतृत्व।

मास्टर नंबर 33: मास्टर शिक्षक – मानवता का उपचारक। 33 = 3+3 = 6 (6 का उच्च कंपन)। जहाँ 6 पोषण और उत्तरदायित्व का प्रतीक है, वहीं 33 निःस्वार्थ प्रेम और वैश्विक सेवा का प्रतीक है। प्रमुख शब्द: करुणा, शिक्षण, उपचार, निःस्वार्थता, सार्वभौमिक प्रेम। इसे मास्टर हीलर, शिक्षकों का शिक्षक और क्राइस्ट चेतना अंक कहा जाता है। सकारात्मक गुण: गहन करुणा, उपचार क्षमता, त्यागमय प्रेम, नैतिकता सहित संपन्नता, प्रेरणादायी शिक्षण, भावनात्मक प्रज्ञा। नकारात्मक पक्ष: अत्यधिक आत्म-बलिदान, शहीद भाव, भावनात्मक थकान, अत्यधिक देने की प्रवृत्ति। जीवन पाठ: सीमाएँ निर्धारित करना, पीड़ित मानसिकता से बचना, सेवा और आत्म-देखभाल में संतुलन, उदाहरण द्वारा शिक्षण।

मास्टर नंबरों का मनोवैज्ञानिक प्रभाव: ऐसे लोग बचपन से स्वयं को अलग अनुभव करते हैं, प्रारंभिक जीवन में चुनौतियाँ झेलते हैं, उच्च अपेक्षाओं का दबाव सहते हैं, भावनात्मक तीव्रता रखते हैं और युवावस्था में चिंता से जूझ सकते हैं। जीवन के बाद के चरणों में पहचान प्राप्त होती है।

मास्टर नंबर और कर्म तीव्रता: ये तीव्र कर्मफल, आध्यात्मिक उत्तरदायित्व और सफलता से पूर्व बड़े परीक्षण लाते हैं। दुरुपयोग होने पर 11⟶2, 22⟶4, 33⟶6 में घट सकते हैं।

विभिन्न क्षेत्रों में प्रभाव: 11 करियर में रचनात्मक-आध्यात्मिक, धन में उतार-चढ़ाव, संबंधों में गहराई; 22 करियर में संरचनात्मक-प्रबंधकीय, धन में विशाल स्तर; 33 करियर में शिक्षण-उपचार, धन में सेवा आधारित समृद्धि।

छाया पक्ष: ऊर्जा का दबाव न सह पाने पर व्यक्ति सामान्य जीवन चुन सकता है, स्वयं को गलत समझा हुआ महसूस कर सकता है या चिंता/अवसाद से जूझ सकता है। मास्टर ऊर्जा परिपक्वता मांगती है।

आध्यात्मिक जागरण: 11 अंतर्ज्ञान जागृत करता है, 22 अभिव्यक्ति की शक्ति, 33 निःस्वार्थ प्रेम। यात्रा है: प्रेरणा ⟶ निर्माण ⟶ करुणा।

क्या ये भाग्यशाली हैं? कोई अंक स्वयं में शुभ-अशुभ नहीं। ये शक्तिशाली पर चुनौतीपूर्ण, प्रतिभाशाली पर दबावयुक्त, उन्नत पर परीक्षित होते हैं। सफलता जागरूकता पर निर्भर है।

उन्नत अवलोकन: अनेक मास्टर नंबर कर्म तीव्रता बढ़ाते हैं। पिनैकल वर्षों में भाग्य परिवर्तन संभव। नाम में बार-बार आने से संवेदनशीलता बढ़ती है। 11 और 22 का संयोजन दूरदर्शी नेतृत्व देता है। 33 नैतिक आचरण के साथ शिखर सफलता, पर अनैतिकता पर पतन भी दे सकता है।

आधुनिक विस्तार: 44 (मास्टर आयोजक), 55 (मास्टर स्वतंत्रता), 66 (मास्टर पोषक), 77 (मास्टर साधक), 88 (मास्टर शक्ति), 99 (मास्टर पूर्णता)। फिर भी पारंपरिक अंक ज्योतिष 11, 22, 33 पर केंद्रित है।

अंतिम संदेश: मास्टर नंबर अहंकार के लिए नहीं — सेवा के लिए होते हैं। यदि आपके पास मास्टर नंबर है, तो जीवन आपको सुविधा, औसतता और भय से परे ले जाएगा। उच्च संभावना + उच्च उत्तरदायित्व = उच्च भाग्य। ये साधारण स्पंदन नहीं, उत्कर्ष का आह्वान हैं।

---अमरत्व का रहस्य---

पिंकी कुंडू

एक बार माता पार्वती ने भगवान शिव से ऐसे गूढ़ ज्ञान देने का अनुरोध किया जो संसार में किसी भी जीव को प्राप्त न हो. वह अमरत्व का रहस्य प्रभु से सुनना चाहती थीं.

अमरत्व का रहस्य किसी कुपात्र के हाथ न लग जाए इस चिंता में पड़कर महादेव पार्वती जी को लेकर एक निर्जन प्रदेश में गए.

उन्होंने एक गुफा चुनी और उस गुफा का मुख अच्छी तरह से बंद कर दिया. फिर महादेव ने देवी को कथा सुनानी शुरू की. पार्वती जी थोड़ी देर तक तो आनंद लेकर कथा सुनती रहीं.

जैसे किसी कथा-कहानी के बीच में हुंकारी भरी जाती है उसी तरह देवी काफी समय तक हुंकारी भरती रहीं लेकिन जल्द ही उन्हें नींद आने लगी.

उस गुफा में तोते यानी शुक का एक घोंसला भी था. घोसले में अंडे से एक तोते के बच्चे का जन्म हुआ. वह तोता भी शिव जी की कथा सुन रहा था.

महादेव की कथा सुनने से उसमें दिव्य शक्तियां आ गईं. जब तोते ने देखा कि माता सो रही हैं. कहीं महादेव कथा सुनाना न बंद कर दें इसलिए वह पार्वती की जगह हुंकारी भरने लगा.

महादेव कथा सुनाते रहे. लेकिन शीघ्र ही महादेव को पता चल गया कि पार्वती के स्थान पर कोई और हुंकारी भर रहा है. वह क्रोधित होकर शुक को मारने के लिए उठे.

शुक वहां से निकलकर भागा. वह व्यास जी के आश्रम में पहुंचा. व्यास जी की पत्नी ने उसी समय जम्हाई ली और शुक सूक्ष्म रूप धारण कर उनके मुख में प्रवेश कर गया.

महादेव ने जब उसे व्यास की शरण में देखा तो मारने का विचार त्याग दिया. शुक व्यास की पत्नी के गर्भस्थ शिशु हो गए. गर्भ में ही इन्हें वेद, उपनिषद, दर्शन और पुराण आदि का सम्यक ज्ञान हो प्राप्त था.

शुक ने सांसारिकता देख ली थी इस लिए वह माया के पृथ्वी लोक की प्रभाव में आना नहीं चाहते थे इसलिए ऋषि पत्नी के गर्भ से बारह वर्ष तक नहीं निकले.

व्यास जी ने शिशु से बाहर आने को कहा लेकिन वह यह कहकर मना करता रहा कि संसार तो मोह-माया है मुझे उसमें नहीं पड़ना. ऋषि पत्नी गर्भ की पीड़ा से मरणासन्न हो गईं.

भगवान श्री कृष्ण को इस बात का ज्ञान हुआ. वह स्वयं वहां आए और उन्होंने शुक को आश्वासन दिया कि बाहर निकलने पर तुम्हारे ऊपर माया का प्रभाव नहीं पड़ेगा.

श्री कृष्ण से मिले वरदान के बाद ही शुक ने गर्भ से निकल कर जन्म लिया. जन्म लेते ही शुक ने श्री कृष्ण और अपने पिता-माता को प्रणाम किया और तपस्या के लिये जंगल चले गए.

व्यास जी उनके पीछे-पीछे 'पुत्र !, पुत्र कह कर पुकारते रहे, किन्तु शुक ने उस पर कोई ध्यान न दिया. व्यास जी चाहते थे कि शुक श्रीमद्भागवत का ज्ञान प्राप्त करें.

किन्तु शुक तो कभी पिता की ओर आते ही न थे. व्यास जी ने एक युक्ति की. उन्होंने श्री कृष्ण लीला का एक श्लोक बनाया और उसका आधा भाग शिष्यों को रटा कर उधर भेज दिया जिधर शुक ध्यान लगाते थे.

एक दिन शुकदेव जी ने भी वह श्लोक सुना. वह श्री कृष्ण लीला के आकर्षण में खींचे सीधे अपने पिता के आश्रम तक चले आए.

पिता व्यास जी से ने उन्हें श्रीमद्भागवत के अठारह हज़ार श्लोकों का विधि वत ज्ञान दिया. शुकदेव ने इसी भागवत का ज्ञान राजा परीक्षित को दिया, जिस के दिव्य प्रभाव से परीक्षित ने मृत्यु के भय को जीत लिया.

।। शिवगायत्री एवं शिवसहस्राक्षर मंत्र प्रयोग ।।

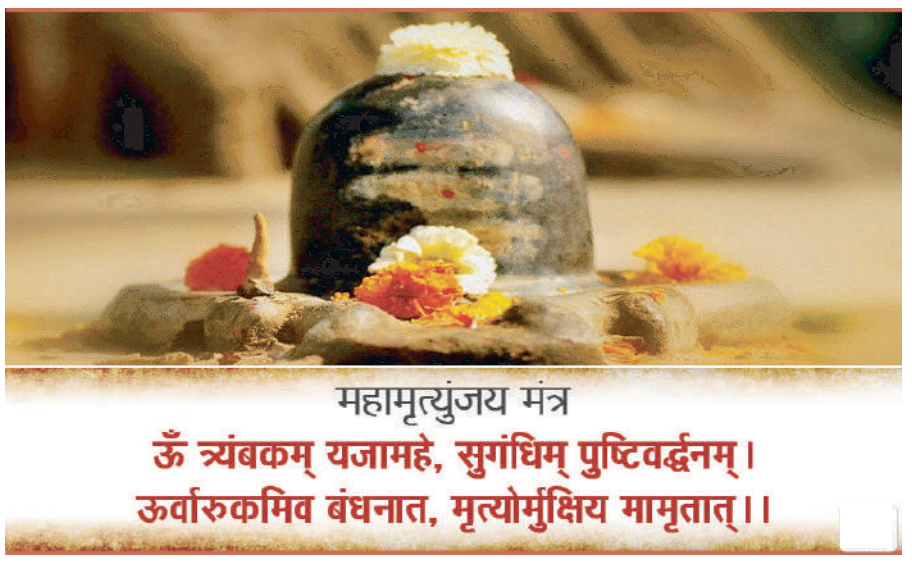

पिंकी कुंडू

ॐ महादेवाय विद्महे, रुद्रमूर्तये धीमहि। तन्नो शिवः प्रचोदयात।।

रुद्राक्ष माला से यथा शक्ति जप करके, निम्न मंत्र का जप करें।

ॐ नमो भगवते सदाशिवाय
सकलतत्वात्मकाय
सर्वमन्त्रस्वरूपाय
सर्वयन्त्राधिष्ठिताय
सर्वतन्त्रस्वरूपाय सर्वतत्वविदूराय
ब्रह्मरुद्रावतारिणे नीलकण्ठाय
पार्वतीमनोहरप्रियाय
सोमसूर्याग्निलोचनाय
भस्मोद्धूलितविग्रहाय महामणि
मुकुटधारणाय माणिक्यभूषणाय
सृष्टिस्थितिप्रलयकाल-
रौद्रावताराय दक्षाध्वरध्वंसकाय
महाकालभेदनाय
मूलधारैकनिलयाय तत्वातीताय
गङ्गाधराय सर्वदेवाधिदेवाय
षडाश्रयाय वेदान्तसाराय
त्रिवर्गसाधनाय
अनन्तकोटिब्रह्माण्डनायकाय
अनन्त वासुकि तक्षक- कर्कोटक
शङ्ख कुलिक- पद्म महापद्मेति-
अष्टमहानागकुलभूषणाय
प्रणवस्वरूपाय चिदाकाशाय
आकाश दिक स्वरूपाय
ग्रहनक्षत्रमालिने सकलाय
कलङ्करहिताय सकललोकैककर्त्रे
सकललोकैकभर्त्रे
सकललोकैकसंहर्त्रे
सकललोकैकगुरवे
सकललोकैकसाक्षिणे
सकलनिगमगुह्याय
सकलवेदान्तपारगाय
सकललोकैकवरप्रदाय
सकललोकैकशङ्कराय
सकलदुरितार्तिभञ्जनाय
सकलजगदभयङ्कराय
शशाङ्कशेखराय शाश्वतनिजवासाय
निराकाराय निराभासाय निरामयाय
निर्मलाय निर्मदाय निश्चिन्ताय
निरहङ्काराय निरङ्कुशाय
निष्कलङ्काय निर्गुणाय निष्कामाय
निरूपप्लवाय निरुपद्रवाय
निरवद्याय निरन्तराय निष्कारणाय
निरातङ्काय निष्प्रपञ्चाय निस्सङ्गाय
निर्द्वन्द्वाय निराधाराय नीरागाय
निष्क्रोधाय निर्लोपाय निष्पापाय
निर्भयाय निर्विकल्पाय निर्भेदाय
निष्क्रियाय निस्तुलाय निःसंशयाय
निरञ्जनाय निरुपमविभवाय
नित्यशुद्धबुद्धमुक्तपरिपूर्ण-
सच्चिदानन्दाद्वयाय
परमशान्तस्वरूपाय
परमशान्तप्रकाशाय तेजोरूपाय
तेजोमयाय तेजोऽधिपतये जय जय
रुद्र महारुद्र महारौद्र भद्रावतार
महाभैरव कालभैरव कल्पान्तभैरव
कपालमालाधर खट्वाङ्ग
चर्मखड्गधर पाशाङ्कुश- डमरूशूल
चापबाणगदाशक्तिभिन्दिपाल-
तोमर मुसल मुद्गर पाश परिघ-
भुशुण्डी शतघ्नी
चक्राद्यायुधभीषणाकार-
सहस्रमुखदंष्ट्राकरालवदन
विकटाट्टहास विस्फारित
ब्रह्माण्डमण्डल नागेन्द्रकुण्डल
नागेन्द्रहार नागेन्द्रवलय
नागेन्द्रचर्मधर नागेन्द्रनिकेतन
मृत्युञ्जय त्र्यम्बक त्रिपुरान्तक
विश्वरूप विरूपाक्ष विश्वेश्वर
वृषभवाहन विषविभूषण
विश्वतोमुख सर्वतोमुख माम# रक्ष
रक्ष ज्वलज्वल प्रज्वल प्रज्वल
महामृत्युभयं शमय शमय
अपमृत्युभयं नाशय नाशय रोगभयम्
उत्सादयोत्सादय विषसर्पभयं शमय
शमय चोरान्मारय मारय मम# शत्रून्
उच्चाटयोच्चाटय त्रिशूलेन विदारय
विदारय कुठारेण भिन्धि भिन्धि
खड्गेन छिन्दि छिन्दि खट्वाङ्गेन
विपोथय विपोथय मुसलेन निष्पेषय
निष्पेषय बाणैः सन्ताडय सन्ताडय
यक्ष रक्षांसि भीषय भीषय अशेष
भूतान्विद्रावय विद्रावय
कूष्माण्डभूतवेतालमारीगण-
ब्रह्मराक्षसगणान्सन्त्रासय सन्त्रासय
मम# अभयं कुरु कुरु मम पापं
शोधय शोधय वित्रस्तं माम्
आश्वासय आश्वासय
नरकमहाभयान्माम् उद्धर उद्धर
अमृतकटाक्षवीक्षणेन माम
आलोकय आलोकय सञ्जीवय
सञ्जीवय क्षुत्तृष्णार्तं माम् आप्यायय
आप्यायय दुःखातुरं माम् आनन्दय
आनन्दय शिवकवचेन माम्
आच्छादय आच्छादय हर हर
मृत्युञ्जय त्र्यम्बक सदाशिव
परमशिव नमस्ते नमस्ते नमस्ते।

विधि-

भस्म से माथे पर तीन लाइन वाला तिलक त्रिपुंड बनायें। हाथ में पानी लेकर भगवान शिव से रक्षा की प्रार्थना करें और जल छोड़ दें। एक माला गुरुमंत्र की करें। अगर गुरु न बनाया हो तो भगवान्शिव को गुरु मानकर ₹ॐ नमः शिवाय₹ मन्त्र का जप कर लें। यदि अपने लिए पाठ नहीं कर रहे हैं तो पाठ वाले जगह पर उसका नाम लें जिसके लिए पाठ कर रहे हैं।

रोगमुक्ति, बाधामुक्ति, मनोकामना के लिए ११ पाठ प्रतिदिन करें। अनुकूलता प्राप्त होगी। रक्षाकवच बनाने के लिए एक पंचमुखी रुद्राक्ष ले लें। उसको दूध, दही, घी, शक्कर, शहद से स्नान करा लें। अब इसे गंगाजल से स्नान कराकर बेलपत्र चढ़ाएं। शिवरात्रि या नवरात्रि में ११, २१, ५१, १०१ या १५१ पाठ करें। पाठ के बाद इसे धारण कर लें।

।। ॐ नमः शिवाय

महादेव का 'नीलकंठ' अवतार और संसार की रक्षा

पिंकी कुंडू

पौराणिक काल में जब देवताओं और असुरों ने मिलकर अमृत प्राप्ति के लिए समुद्र मंथन किया, तो सबसे पहले उसमें से 'हलाहल' नामक अत्यंत विनाशकारी विष निकला। उस विष की ज्वाला इतनी तीव्र थी कि समस्त सृष्टि जलने लगी।

सभी देवता और ऋषि-मुनि त्राहि-त्राहि करते हुए महादेव की शरण में पहुंचे। करुणासागर भोलेनाथ ने बिना क्षण गँवाए उस विष को अपनी हथेली पर लिया और उसका पान कर लिया। विष की ऊष्णता से उनका कंठ नीला पड़ गया, जिसके कारण वे 'नीलकंठ' कहलाए।

महादेव ने उस विष को अपने हृदय से नीचे नहीं जाने दिया, क्योंकि उनके हृदय में समस्त संसार निवास करता है। आज की यह पावन रात्रि हमें सिखाती है कि दूसरों के दुखों और बुराइयों को पीकर भी संसार में कल्याण का अमृत कैसे फैलाया जाता है।

सीखः महादेव की भक्ति का अर्थ है—अपने भीतर के क्रोध और ईर्ष्या रूपी विष को त्याग कर दूसरों के प्रति दया भाव रखना।

पंडित भगवत दयाल शर्मा का जीवन समाज सेवा, ईमानदारी की मिसाल : कार्तिकेय शर्मा

परिवहन विशेष न्यूज

बेरी में प्रथम मुख्यमंत्री स्व पंडित भगवत दयाल शर्मा की 33वीं पुण्यतिथि पर श्रद्धांजलि कार्यक्रम आयोजित

बेरी, 22 फरवरी। हरियाणा के प्रथम मुख्यमंत्री एवं महान स्वतंत्रता सेनानी स्व पंडित भगवत दयाल शर्मा की 33वीं पुण्यतिथि के अवसर पर बेरी स्थित समाधि स्थल पर श्रद्धांजलि कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में बतौर मुख्यतिथि राज्यसभा सांसद कार्तिकेय शर्मा ने शिरकत की।

मुख्यतिथि एवं राज्यसभा सांसद कार्तिकेय शर्मा ने स्व पंडित भगवत दयाल शर्मा के समाधि स्थल पर पुष्पचक्र अर्पित कर उन्हें नमन किया तथा उनके योगदान का स्मरण किया। इस दौरान एसडीएम रेणुका नांदल व पंडित भगवत दयाल शर्मा ट्रस्ट की अध्यक्ष आशा शर्मा ने स्व पंडित भगवत दयाल शर्मा को नमन करते हुए युवा पीढ़ी से प्रेरणा लेने का आह्वान किया।

राज्यसभा सांसद ने कहा कि पंडित भगवत दयाल शर्मा ने स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और हरियाणा के प्रथम मुख्यमंत्री के रूप में प्रदेश के विकास की मजबूत नींव रखी। उनका जीवन समाज सेवा, ईमानदारी और समर्पण का प्रेरणादायी उदाहरण है।

उन्होंने कहा कि स्व.पंडित भगवत दयाल शर्मा हमेशा गरीब,किसान, मजदूरों सहित 36 बिरादरी को साथ लेकर चलते थे। उनका हमेशा ही लक्ष्य सबका साथ- सबका विकास व गरीबों के उत्थान का मूल मंत्र रहा है। इसी मूल मंत्र के साथ प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी व मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी के नेतृत्व में देश और प्रदेश की सरकार सबका साथ -सबका विकास के प्रतिबद्ध है।

श्री कार्तिकेय शर्मा ने कहा कि स्व पंडित भगवत दयाल शर्मा का संपूर्ण जीवन राष्ट्र और समाज के लिए समर्पित रहा। उन्होंने कहा कि उनकी विचारधारा का मूल आधार यह था कि विकास केवल भौतिक प्रगति तक सीमित न रहकर भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों पर आधारित होना चाहिए। उन्होंने व्यक्ति, समाज और प्रकृति के बीच संतुलन और सामंजस्य पर जोर दिया।

उन्होंने युवाओं से आह्वान किया कि वे उनके आदर्शों, सिद्धांतों और त्याग की भावना को अपने जीवन में अपनाएं तथा प्रदेश और देश के विकास में योगदान दें।

उन्होंने कहा कि पंडित जी के परिवार जन आशा शर्मा द्वारा उनके कार्यों को आगे बढ़ाया जा रहा है,यह एक सराहनीय कदम हैं। उन्होंने कहा कि ट्रस्ट द्वारा बनाए जाने वाले हॉल के भी उन्होंने हर संभव मदद करने की घोषणा के साथ ही कहा कि यहां हॉल में जरूरतमंद बच्चों के लिए स्मार्ट क्लास भी शुरू करें ताकि गरीब बच्चों को शिक्षा का अवसर मिले।

उन्होंने पंडित भगवत दयाल शर्मा स्मृति स्थल के जीर्णोद्धार के लिए ट्रस्ट प्रतिनिधियो को हर संभव सहयोग के लिए आश्वस्त किया। इस दौरान उन्होंने बेरी उपमंडल में बाल विवाह मुक्त अभियान रथ पर हस्ताक्षर कर लोगों को बाल विवाह रोकने तथा समाज को जागरूक करने की अपील की।

कार्यक्रम के दौरान उपस्थित लोगों ने स्व पंडित भगवत दयाल शर्मा को श्रद्धांजलि अर्पित की

इस अवसर पर हरियाणा ब्राह्मण महासभा के अध्यक्ष सतीश गौतम, नपा चेयरमैन देवेंद्र उर्फ बिल्लु पहलवान,मार्केट कमेटी बेरी के चेयरमैन राजेंद्र शर्मा, पूर्व चेयरमैन मनीष शर्मा नम्बरदार,ब्राह्मण महासभा के अध्यक्ष सत्यनारायण शर्मा, बेरी ब्राह्मण महासभा के प्रधान सुभाष शर्मा, गौसेवा आयोग के पूर्व सदस्य संत सुरहेती, अशोक तंवर, ट्रस्ट के पदाधिकारी मयंक शर्मा, रेणुका शर्मा, दिनेश शर्मा,नीलम अहलावत, पार्षद तवीन, रविंद्र कौशिक, सहित क्षेत्र के अनेक गणमान्य सदस्य उपस्थित रहे।

जन समस्याओं के त्वरित समाधान हेतु आज लगेंगे जिला व उपमंडल स्तरीय समाधान शिविर: जगनिवास

झज्जर, 22 फरवरी। जनता की शिकायतों के त्वरित, पारदर्शी एवं प्रभावी निस्तारण के उद्देश्य से जिला प्रशासन द्वारा आज (सोमवार 23 फरवरी) को जिला मुख्यालय सहित सभी उपमंडल स्तर पर समाधान शिविर आयोजित किए जा रहे हैं। इन शिविरों का आयोजन प्रातः 10 बजे से दोपहर 12 बजे तक किया जाएगा, जहां नागरिकों की समस्याओं का मौके पर ही समाधान सुनिश्चित करने के लिए संबंधित विभागों के अधिकारी उपस्थित रहेंगे। जिला स्तरीय समाधान शिविर का आयोजन लघु सचिवालय, झज्जर के कॉन्फ्रेंस हॉल में किया जाएगा, जिसकी अध्यक्षता उपायुक्त करेंगे। इस दौरान उपायुक्त विभिन्न विभागों से संबंधित शिकायतें सुनते हुए अधिकारियों को समयबद्ध समाधान सुनिश्चित करने के निर्देश देंगे। इसी प्रकार उपमंडल स्तर पर भी संबंधित लघु सचिवालय परिसरों में समाधान शिविर लगाए जाएंगे। बहादुरगढ़ में एसडीएम अभिनव सिवाच, बेरी में एसडीएम रेणुका नांदल तथा बादली में एसडीएम डॉ. रमन गुप्ता की अध्यक्षता में शिविर आयोजित होंगे, जहां प्राप्त शिकायतों का प्राथमिकता के आधार पर निस्तारण किया जाएगा। अतिरिक्त उपायुक्त जगनिवास ने बताया कि समाधान शिविर प्रशासन और आमजन के बीच सीधा संवाद स्थापित करने का सशक्त मंच हैं। उन्होंने बताया कि जिला मुख्यालय पर ऐसे शिविर नियमित रूप से आयोजित किए जाते हैं, जिनमें विभिन्न विभागों की संयुक्त उपस्थिति से लोगों को एक ही स्थान पर उनकी समस्याओं का त्वरित समाधान उपलब्ध कराया जाता है।

हरियाणा गौ सेवा आयोग के अध्यक्ष श्रवण कुमार गर्ग सोमवार को करेंगे झज्जर का दौरा

झज्जर, 22 फरवरी। हरियाणा गौ सेवा आयोग के अध्यक्ष श्रवण कुमार गर्ग सोमवार को गांव खरमाण स्थित गोकुल फार्म का दौरा करेंगे, जहां वे गौवंश के नस्ल सुधार से संबंधित व्यवस्थाओं का निरीक्षण कर अधिकारियों से जानकारी प्राप्त करेंगे। इसके उपरांत उपायुक्त कार्यालय झज्जर में दोपहर 02:30 बजे गौशालाओं की व्यवस्थाओं एवं बेसहारा गौवंश पुनर्वास अभियान की प्रगति की समीक्षा को लेकर संयुक्त बैठक आयोजित की जाएगी। बैठक में जिला उपायुक्त झज्जर, जिला उपनिदेशक, उपमंडल अधिकारीगण, पशुपालन विभाग के संबंधित पशु चिकित्सक, पुलिस विभाग के जिला नोडल अधिकारी/पुलिस उप-अधीक्षक, पूर्व सदस्य हरियाणा गौ सेवा आयोग तथा जिले की सभी गौशालाओं व नंदी शालाओं के प्रबंधक उपस्थित रहेंगे।

विश्वविख्यात भागवत भूषण आचार्य डॉ. रामविलास चतुर्वेदी महाराज 23 फरवरी से कहेंगे श्रीमद्भागवत की कथा

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। छटीकरा रोड स्थित श्री चिंतामणि कुंज में सनातन संस्कार सेवा संस्थान के द्वारा महामंडलेश्वर स्वामी डॉ. आदित्यानन्द महाराज के पावन सानिध्य में अष्ट दिवसीय श्रीमद्भागवत कथा सप्ताह ज्ञान यज्ञ एवं होली महोत्सव का आयोजन दिनांक 23 फरवरी से 01 मार्च 2026 पर्यंत अत्यंत श्रद्धा एवं धूमधाम के साथ आयोजित किया जा रहा है। जानकारी देते हुए मीडिया प्रभारी गुलशेन्द्र चतुर्वेदी ने बताया है कि महोत्सव के अन्तर्गत विश्वविख्यात भागवत भूषण आचार्य डॉ. रामविलास चतुर्वेदी महाराज अपनी सुमधुर वाणी में अपराह्न 3 से सायं 7 बजे तक देश-विदेश से आए असंख्य भक्तों-श्रद्धालुओं को श्रीमद्भागवत की अमृत कथा श्रवण कराएंगे।

उन्होंने बताया कि इस अष्टदिवसीय महोत्सव के अंतर्गत 27 फरवरी को सायं 05 बजे से लड्डु होली, 28 फरवरी को सायं 05 बजे से जलेबी की होली एवं 01 मार्च को सायं 05 बजे से भव्य फूलों की होली आदि के कार्यक्रम आयोजित होंगे।जिसमें सभी भक्त-श्रद्धालु सादर आमंत्रित हैं।

समान न्याय ही सशक्त राष्ट्र की नींव ! डॉ. विक्रम चौरसिया

परिवहन विशेष न्यूज

लोकतंत्र केवल मतदान से जीवित नहीं रहता; उसकी वास्तविक शक्ति न्याय व्यवस्था की निष्पक्षता और विश्वसनीयता में निहित होती है। किसी भी राष्ट्र की मजबूती इस बात से मापी जाती है कि वहाँ न्याय सभी नागरिकों तक कितनी समानता, पारदर्शिता और सुगमता के साथ पहुँचता है। जब न्याय संतुलित और सुलभ होता है, तभी लोकतांत्रिक संस्थाओं के प्रति जनविश्वास सुदृढ़ होता है।

हमारा संविधान प्रत्येक नागरिक को समानता का अधिकार प्रदान करता है। यह केवल एक कानूनी प्रावधान नहीं, बल्कि लोकतंत्र की आत्मा है। समानता का अर्थ है कि कानून की दृष्टि में सभी व्यक्ति बराबर हों और न्याय पाने का अवसर प्रत्येक को समान रूप से प्राप्त हो। किंतु इस आदर्श का वास्तविक महत्व तभी है, जब यह व्यवहार में भी स्पष्ट रूप से दिखाई दे।

सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियाँ कई बार न्याय तक पहुँच को प्रभावित करती हैं। संसाधनों और जानकारी से संपन्न व्यक्ति के लिए प्रक्रियाएँ अपेक्षाकृत सरल प्रतीत होती हैं, जबकि सीमित साधनों वाले नागरिक के लिए वही प्रक्रिया जटिल और समयसाध्य हो सकती है। न्याय में विलंब केवल व्यक्तिगत कठिनाई नहीं उत्पन्न करता, बल्कि समाज के सामूहिक विश्वास को भी कमजोर करता है।

न्याय व्यवस्था की विश्वसनीयता उसकी पारदर्शिता और समयबद्धता में निहित है। प्राथमिकी से लेकर अंतिम निर्णय तक प्रत्येक चरण स्पष्ट, उत्तरदायी और संतुलित होना चाहिए। सरल प्रक्रियाएँ, प्रभावी कानूनी सहायता और तकनीकी पारदर्शिता न्याय को अधिक सुलभ बना सकती हैं। ऐसे सुधार लोकतंत्र को व्यवहारिक रूप से सशक्त बनाते हैं।

आज का युवा वर्ग परिश्रम, शिक्षा और नैतिक मूल्यों के आधार पर आगे बढ़ना चाहता है। उसे ऐसी न्यायिक संरचना की आवश्यकता है जो निष्पक्ष और सुरक्षित हो, ताकि उसका विश्वास व्यवस्था में बना रहे और वह समाज के सकारात्मक परिवर्तन में सक्रिय भूमिका निभा सके।

न्याय दया नहीं, अधिकार है। जब यह अधिकार बिना किसी भेदभाव के प्रत्येक नागरिक तक पहुँचे, तभी लोकतंत्र सुदृढ़ और राष्ट्रसमृद्ध बनता है। समान न्याय ही सामाजिक समरसता, जनविश्वास और सतत प्रगति की वास्तविक नींव है।

चिंतक/ आईएएस मेंटर/एक्टिविस्ट/ दिल्ली विश्वविद्यालय 9069821319

सनातन संस्कार धाम में संतों व विद्वानों के द्वारा हुआ नव संवत 2083 सनातन पंचांग का विमोचन

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

प्रख्यात ज्योतिषाचार्य, वास्तुविद् व भागवत प्रवक्ता आचार्य डॉ. रामविलास चतुर्वेदी के द्वारा पंचांग निर्मित कर प्रतिवर्ष समूचे देश में किया जाता है नि:शुल्क वितरित

वृन्दावन। आनंद वाटिका स्थित सनातन संस्कार धाम में संतों व विद्वानों के द्वारा नव संवत 2083 के सनातन पंचांग का विमोचन बड़े ही हर्षोल्लास और धूमधाम के साथ किया गया।

सनातन संस्कार धाम के संस्थापक, भागवत भूषण आचार्य डॉ. रामविलास चतुर्वेदी ने बताया कि उनके द्वारा प्रत्येक वर्ष सनातन पंचांग मथुरा के अक्षांश-रेखांश को लेकर के निर्मित किया जाता है।इस पंचांग में तिथि, मुहूर्त, व्रत, पर्व का विस्तृत वर्णन किया जाता है। सनातन पंचांग की विशेषता है कि इसमें सभी व्रत एवं पर्वों को एक तिथि में मनाए जाने का निर्णय दिया जाता है।

अखिल भारत वर्षीय ब्राह्मण महासभा के राष्ट्रीय प्रवक्ता व ब्रज प्रांत अध्यक्ष पंडित बिहारी लाल वशिष्ठ ने कहा कि प्रख्यात ज्योतिषाचार्य, वास्तुविद् व भागवत प्रवक्ता

आचार्य डॉ. रामविलास चतुर्वेदी के द्वारा यह प्रत्येक वर्ष सनातन पंचांग निर्मित कर पूरे भारतवर्ष में नि:शुल्क वितरण किया जाता है।

हनुमान टेकरी आश्रम के महंत दशरथ दास महाराज ने कहा कि सनातन संस्कार धाम के तत्वावधान में जिस प्रकार से पंचांग तैयार कर समाज को एक सरल और श्रेष्ठ व्रत पर्व तथा सनातन संस्कृति को बढ़ाने का कार्य किया जा रहा है,यह बहुत ही श्रेयकर है।

धर्म रक्षा संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष पण्डित सौरभ गौड़ ने कहा कि सनातन पंचांग समस्त हिंदुओं के लिए बहुत ही उपयोगी है।जिसमें तिथि मुहूर्त के साथ अंक ज्योतिष का भी विस्तार से वर्णन किया गया है।यह पंचांग पूरे भारतवर्ष में सभी प्रमुख मंदिरों पर सनातन संस्कार सेवा संस्थान के द्वारा वितरित किया जाता है।

प्रख्यात साहित्यकार रूपी रत्नश्र डॉ. गोपाल चतुर्वेदी एवं आचार्य बद्रीश महाराज ने कहा की आचार्य रामविलास चतुर्वेदी समाज के कार्यों में सदैव तत्पर रहते हैं।उनके द्वारा समाज हित में जो भी कार्य किए जा रहे हैं, उससे असंख्य व्यक्ति लाभान्वित हुए हैं और हो रहे हैं।

इस अवसर पर आचार्य गुलशेन्द्र चतुर्वेदी, युवा साहित्यकार डॉ. राधाकांत शर्मा, ब्रजेश चतुर्वेदी, गजेंद्र चतुर्वेदी, पवन शास्त्री, देव शर्मा, उदित तिवारी, शिवांश पाठक, आशुतोष गोस्वामी, शिवांशु तिवारी, केशरी तिवारी आदि की उपस्थिति विशेष रही।

पांचजन्य प्रेक्षागृह में 'वृहद विधिक सहायता एवं सेवा शिविर' का आयोजन

परिवहन विशेष न्यूज

मथुरा। जिलाधिकारी के कुशल निर्देशन एवं अपर जिलाधिकारी डॉ. पंकज कुमार के प्रभावी नेतृत्व में रविवार को डैम्पियर नगर स्थित पांचजन्य प्रेक्षागृह में 'वृहद विधिक सहायता एवं सेवा शिविर' का भव्य आयोजन किया गया। राजस्व और आपदा विभाग के इस संयुक्त प्रयास में आम जनता को शासन की कल्याणकारी योजनाओं से रूबरू कराया गया।

योजनाओं का लाभ दिलाने पर जोर दिया गया शिविर की अध्यक्षता करते हुए एडीएम डॉ. पंकज कुमार ने कहा कि प्रशासन का मुख्य ध्येय अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति तक सरकारी योजनाओं को पहुँचाना है। उनके नेतृत्व में विभाग द्वारा मुख्यमंत्री कृषक दुर्घटना कल्याण योजना, दैवीय आपदा और स्वामित्व योजना के स्टॉल लगाकर लोगों की समस्याओं का त्वरित निस्तारण किया गया। उन्होंने राजस्व अधिकारियों को निर्देशित किया कि आवेदनों पर संवेदनशीलता के साथ कार्यवाही की जाए।

विशेषज्ञों ने साझा किए अनुभव एडीएम के मार्गदर्शन में आयोजित इस कार्यक्रम में जिला आपदा विशेषज्ञ पूजा राना ने आपदा प्रबंधन की बारीकियों को समझाया। उन्होंने बताया कि जिला प्रशासन किसी भी आपात स्थिति से निपटने के लिए आधुनिक संसाधनों और कुशल रणनीति के साथ सदैव तत्पर है।आपदा मित्रों को मिला प्रोत्साहन तकनीकी सत्र में आपदा मित्र एवं मास्टर ट्रेनर इंजीनियर अशोक यादव ने एडीएम के समक्ष आपदा सुरक्षा का प्रदर्शन किया।

इं अशोक यादव यादव ने आकाशीय बिजली और लू से बचाव के व्यावहारिक तरीके बताते हुए पोस्टर प्रदर्शनी के माध्यम से लोगों को प्रशिक्षित किया।

एडीएम ने मास्टर ट्रेनर और आपदा मित्रों के सेवा भाव की सराहना करते हुए उन्हें जन-जागरूकता बढ़ाने के लिए प्रेरित किया।

इस अवसर पर भारी संख्या में ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों से आए लाभार्थियों ने पंजीकरण कराया और विभागीय योजनाओं की जानकारी प्राप्त की।

कार्यक्रम के सफल आयोजन में राजस्व विभाग एवं आपदा मित्र और सिविल डिफेंस के वालंटियर्स का विशेष सहयोग रहा। शिविर में आपदा विभाग की जिला आपदा विशेषज्ञ पूजा राना, आपदा मित्र अशोक यादव, आपदा बाबु दीपू, राम सैनी, शुभम कुमार,राजेश, हेमंत, पंकज, कृष्णा, पवन, जयवीर, इंद्रेश, श्याम, रोहित, गोविंद, मुकेश आदि मौजूद रहे !

नए भारत की कनेक्टिविटी को गतिः नरेंद्र मोदी ने मेरठ में रैपिड रेल और मेट्रो सेवाओं का शुभारंभ किया

संगिनी घोष

क्रांतिधरा से विकास का नया संदेश

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मेरठ में विभिन्न विकास परियोजनाओं का उद्घाटन करते हुए इसे "विकसित उत्तर प्रदेश और विकसित भारत" की दिशा में अहम कदम बताया। विशाल जनसभा को संबोधित करते हुए उन्होंने शहर की ऐतिहासिक पहचान का उल्लेख किया और कहा कि आधुनिक कनेक्टिविटी परियोजनाएँ देश में बुनियादी ढाँचे के परिवर्तन का संकेत हैं।

ऐसे देखें तो, यह कार्यक्रम केवल परियोजनाओं का उद्घाटन नहीं बल्कि शहरी प्रगति और राष्ट्रीय विकास दृष्टि के संगम का प्रतीक रहा।

एक ही मंच से मेट्रो और रैपिड रेल की शुरुआत

पहली बार एक ही दिन और एक ही मंच से मेट्रो सेवा और नमो भारत रैपिड रेल का शुभारंभ किया गया। अधिकारियों के अनुसार, मेट्रो शहर के भीतर यात्रा को आसान बनाएगी, जबकि रैपिड रेल अंतर-शहरी आवागमन को तेज कर ट्विन-सिटी विकास मॉडल को गति देगी।

नेतृत्व और जनता की बड़ी मौजूदगी

कार्यक्रम में योगी आदित्यनाथ, केंद्रीय मंत्री पंकज चौधरी, नेता जयंत चौधरी, उपमुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक सहित जनप्रतिनिधि और हजारों नागरिक उपस्थित रहे। बड़ी संख्या में लोगों की भागीदारी ने परियोजनाओं के प्रति जन उत्साह को दर्शाया।

विकास रणनीति में कनेक्टिविटी का महत्व

प्रधानमंत्री ने कहा कि आधुनिक परिवहन व्यवस्था आर्थिक विकास, रोजगार सृजन और शहरी विस्तार के लिए अनिवार्य है। उन्होंने बताया कि तेज और उन्नत रेल नेटवर्क यात्रा समय घटाने के साथ निवेश, पर्यटन और व्यापार गतिविधियों को भी बढ़ावा देते हैं।

यह परियोजना क्यों अहम मानी जा रही है

विशेषज्ञों का मानना है कि मेट्रो और रैपिड रेल जैसी एकीकृत परिवहन प्रणालियाँ क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था को नई गति दे सकती हैं और लॉजिस्टिक बाधाओं को कम करती हैं। इन्हें दीर्घकालिक शहरी परिवर्तन का आधार भी माना जाता है।

ऐसे देखें तो, इन परियोजनाओं की वास्तविक सफलता इस बात से तय होगी कि ये आम नागरिकों की रोज़मर्रा की यात्रा और आर्थिक अवसरों को कितना बेहतर बनाती हैं।

मुख्य बिंदु

* एक ही मंच से मेट्रो और नमो भारत रैपिड रेल का शुभारंभ।
* क्षेत्रीय कनेक्टिविटी और शहरी विकास को बढ़ावा देने का लक्ष्य।
* उद्घाटन समारोह में बड़ी जनभागीदारी।
* नेतृत्व ने बुनियादी ढाँचे को विकास का मुख्य आधार बताया।
* विकसित यूपी और विकसित भारत के विज़न से जुड़ी पहल।
* यात्रा सुविधा और आर्थिक गतिविधियों में वृद्धि की उम्मीद।

आगे की दिशा

विश्लेषकों का मानना है कि यदि इसी गति से विस्तार और संचालन जारी रहा, तो मेरठ उत्तर भारत का प्रमुख कनेक्टिविटी केंद्र बन सकता है। अब सबकी नजर सेवा संचालन, यात्रियों की प्रतिक्रिया और भविष्य के विस्तार योजनाओं पर रहेगी।

दिल्ली कोर्ट ने 2007 लूट केस में तीनों आरोपी बरी किए

परिवहन विशेष न्यूज

कड़कड़डूमा कोर्ट ने 21 फरवरी 2026 को तीन अपीलों (सीए नंबर 175, 176, 177/2022) को स्वीकार करते हुए मोहित भटनागर, पंकज सिंह बिष्ट और मनू श्रीवास्तव उज्जवल को 2007 के कनॉट प्लेस लूट मामले में बरी कर दिया।

घटना का विवरण 12 जुलाई 2007 को शिकायतकर्ता सोनू ने आरोप लगाया कि कॉफी हाउस के पास फोन पर बात करते हुए चार युवक — उज्जवल, मनू, पंकज और शंकी — ने उसे पीटा और नोकिया मोबाइल तथा 1250 रुपये लूट लिए।

पुलिस ने तीनों को सोनू की पहचान पर गिरफ्तार किया; चोरी की वस्तुएं न मिलने पर धारा 411 आईपीसी से बरी, लेकिन ट्रायल कोर्ट ने धारा 392/394/34 आईपीसी के तहत 3 साल कैद और 6000 रुपये जुर्माना लगाया।

अपील के मुख्य तर्क आरोपियों ने कहा कि सोनू से क्रिकेट विवाद के कारण झूठा फंसाया गया; उसका चाचा इंस्पेक्टर था।

विरोधाभासः कोई गवाह नहीं (भीड़भाड़ वाली जगह), चौथा आरोपी लापता, रिकवरी पर बयान उलटे, कोई टेस्ट आइडेंटिफिकेशन परेड नहीं, साधारण चोटें।

अदालत का फैसला अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश मनु वेदवान ने अभियोजन को संदेह से परे साबित करने में विफल पाया।

अधिवक्ता विकासदीप शर्मा द्वारा दी गई दलीलें आई काम गवाही में असंगतियां, सीसीटीवी/कॉल रिकॉर्ड न होना, डर/हिंसा सिद्ध न होना कारण बने। तीनों धारा 394/34 आईपीसी से बरी; कोई पूर्व आपराधिक रिकॉर्ड नहीं और अधिवक्ता विकासदीप शर्मा के द्वारा हाई कोर्ट और सुप्रीम कोर्ट के जजमेंट का हवाला देते हुए बताया गया के रिकवरी नहीं तो कनविक्शन नहीं जिससे कि पीड़ित को सही न्याय मिला।

हिन्दू सम्मेलन में गूंजी एकता की हुंकार, आचार्य मनीष हरि का स्वदेशी और संगठन पर जोर

मुख्य संवाददाता

गुरुग्राम। एस डी स्कूल में आयोजित भव्य हिन्दू सम्मेलन में सुप्रसिद्ध गौभक्त एवं धर्मप्रचारक आचार्य मनीष हरि ने ओजस्वी उद्बोधन देते हुए सनातन समाज को एकसूत्र में बंधने का आह्वान किया। सम्मेलन में बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित रहे और पूरे परिसर में राष्ट्रभक्ति एवं धार्मिक उत्साह का वातावरण बना रहा।

अपने संबोधन में आचार्य मनीष हरि ने कहा कि वर्तमान समय में सभी सनातनियों को मतभेद भुलाकर राष्ट्र और धर्महित को सर्वोपरि रखना चाहिए। उन्होंने कहा, "जब-जब समाज संगठित हुआ है, तब-तब भारत ने विश्वगुरु का स्थान प्राप्त किया है। आज पुनः उसी एकता और जागरूकता की आवश्यकता है।"

उन्होंने युवाओं को भारतीय संस्कृति, गौसंवर्धन, संस्कारयुक्त शिक्षा तथा स्वदेशी उत्पादों के उपयोग के लिए प्रेरित करते हुए कहा कि आर्थिक स्वतंत्रता के बिना वास्तविक स्वतंत्रता अधूरी है। "यदि प्रत्येक सनातनी स्वदेशी वस्तुओं को अपनाएगा और स्थानीय व्यापारियों का समर्थन करेगा, तो भारत स्वतः ही स्वावलंबी और सशक्त राष्ट्र बन जाएगा," उन्होंने कहा।

सम्मेलन के दौरान "भारत माता की जय" और "जय श्रीराम" के उद्घोष से पूरा वातावरण गुंजायमान हो उठा। कार्यक्रम का समापन राष्ट्र एवं धर्म की रक्षा के संकल्प के साथ किया गया।

इस अवसर पर गुरुग्राम महानगर संघसंचालक माननीय जगदीश ग्रोवर, नगर कार्यवाह तरुण गोयल, अजय जैन, यशवंत शेखावत (विहिप), विश्व हिंदू परिषद गुरुग्राम विभाग अध्यक्ष एवं समाजसेवी ईश्वर मित्तल तथा अखंड भारत से सुनील हरजाई सहित अनेक गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

निरंकारी मिशन मंडल लोंगवाल के सेवादारों ने चलाया सफाई अभियान

परिवहन विशेष न्यूज

लोंगोवाल, 22 फरवरी (जगसीर सिंह) - जल प्रकृति का अमूल्य उपहार है, जीवन की आधारशिला और मानव सभ्यता की जीवनरेखा। जब यह जल स्वच्छ और संरक्षित रहता है, तो केवल पर्यावरण ही नहीं, समाज का सामूहिक स्वास्थ्य और संतुलन भी सुदृढ़ होता है। इसी विचार को साकार रूप देते हुए प्राकृतिक जल स्रोतों, नदियों, तालाबों, झीलों और समुद्री तटों की निस्वार्थ भाव से स्वच्छता एवं संरक्षण का व्यापक अभियान आज जन-जन के लिए प्रेरणा का स्रोत बन रहा है। यह पहल केवल सफाई तक सीमित नहीं, बल्कि जागरूकता, जिम्मेदारी और सामूहिक सहभागिता का सशक्त संदेश है।

'स्वच्छ जल, स्वच्छ मन' अभियान के चौथे चरण का भव्य एवं प्रेरणास्पद आयोजन सतगुरु माता सुदीक्षा जी महाराज एवं निरंकारी राजपिता रमित जी के मार्गदर्शन में भारतवर्ष के 25 राज्यों, केन्द्रशासित प्रदेश के 930 शहरों के 1600 से अधिक स्थानों पर सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ, जिसमें लगभग 12 लाख स्वयंसेवक सम्मिलित हुए। यह केवल एक पर्यावरणीय प्रयास नहीं, बल्कि अध्यात्म, सेवा और सामाजिक उत्तरदायित्व का अद्भुत समन्वय था, जो जन-जन के अंतर्मन को स्पर्श करते हुए जागरूकता एवं कर्तव्यबोध की भावना को और अधिक सुदृढ़ बनाता है। संत निरंकारी मिशन की सामाजिक शाखा संत निरंकारी चैरिटेबल फाउंडेशन के तत्वावधान में, बाबा हरदेव सिंह जी की अनेक शिक्षाओं से प्रेरणा लेते हुए इस 'प्रोजेक्ट अमृत' का आयोजन किया गया। यह परियोजना मानवता को प्रकृति के प्रति संवेदनशील बनाते हुए जल संरक्षण, स्वच्छता और पर्यावरण संतुलन के प्रति सामूहिक संकल्प का संदेश देती है।

इसी लड़ी के अनुसार निरंकारी मिशन मण्डल लोंगोवाल के 100 से ज्यादा सेवादारों जिनमें भारी काफ़ी गिनती में बहने भी शामिल थी, उन्होंने बड़बर रोड पर स्थित रजवाहे के पुल के नीचे साफ सफाई की जिसमें काफी गंदगी जमा हो चुकी थी, सेवादारों ने काफी मेहनत करके इसको बिल्कुल खाली कर दिया जिससे रजवाही में पानी की सप्लाई ठीक तरीके से चल सकेगी, इसके बाद सेवादारों ने निरंकारी भवन से तहसील दफ्तर तक सड़क के दोनों किनारो को बिल्कुल साफ किया और तहसील दफ्तर में सैकड़ो की संख्या में लगे पेड़ों को पानी भी दिया गया ।इस समय लोंगोवाल ब्रांच के संयोजक श्री रणजीत सिंह ढिल्लों ने बताया कि इस अभियान का शुभारम्भ सेवादल के प्रार्थना गीत से हुआ, जिससे संपूर्ण वातावरण आध्यात्मिक ऊर्जा से ओत-प्रोत हो उठा। इस अवसर पर देशभर में प्रसारित दिशा-निर्देशों का पूर्णतः पालन सुनिश्चित करते हुए सुरक्षा, अनुशासन एवं स्वच्छता को सर्वोच्च प्राथमिकता प्रदान की गई, जो आयोजन की सुव्यवस्थित एवं संस्कारित कार्यशैली को दर्शाता है। इसी अवसर पर खुले प्रांगण में सत्संग कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया, जिसमें श्रद्धालुओं ने बड़ी संख्या में सहभागिता की। आज ही दिल्ली के बुराड़ी चौक ग्राउंड न0.8 में आयोजित विशेष सत्संग कार्यक्रम में सतगुरु माता सुदीक्षा जी महाराज ने अपने अमृतमय प्रवचनों में फरमाया कि बाबा जी की शिक्षाएँ केवल स्मरण करने के लिए नहीं, बल्कि जीवन में उतारने के लिए हैं। सतगुरु माता जी ने कहा कि सच्ची श्रद्धांजलि शब्दों से नहीं, बल्कि कर्मों से दी जाती है। यदि हम स्वयं को उनके अनुयायी कहते हैं, तो हमें आत्ममंथन करना होगा कि क्या हम वास्तव में प्रेम, सेवा, करुणा और समदृष्टि जैसे मानवीय गुणों को अपने जीवन में धारण कर रहे हैं। बाबा हरदेव सिंह जी महाराज का सम्पूर्ण जीवन मानव कल्याण को समर्पित रहा। उन्होंने सिखाया कि सेवा, सुमिरन और सत्संग जीवन का आधार हैं। भक्ति केवल वाणी तक सीमित न रहे, बल्कि व्यवहार में झलके - यही उनका स्पष्ट संदेश था। निःसंदेह, 'स्वच्छ जल, स्वच्छ मन' का यह संदेश केवल एक अभियान नहीं, बल्कि एक जीवन-दर्शन है, जो जल की धाराओं में निर्मलता स्थापित करने के साथ ही मन की गहराइयों में चेतना को आलोकित करता है। यही ऊर्जा आने वाली पीढ़ियों के लिए एक संतुलित, सुरक्षित और शाश्वत भविष्य की आधारशिला बनाती है।

घनिष्ठता की सुध...!

क्यों? याद आते हैं उन्हें 'हमेशा' सिर्फ़ हक़,
मुश्किल में पालक दिल नहीं जाता धड़क।
सिर्फ लेना ही लेना क्योंकर उन्हें हैं सूझता,
कुछ 'देने' हेतू मन कभी क्यों न पसिजता।

हाल-चाल भले बुरे ना हो 'पूछ' लिया करो,
तुम रिश्तों के घनिष्ठता की सुध लिया करों।

क्या? हमने ही 'बिसारने का प्रण' लिया हैं,
वहीं गडे मुर्दे उखाड़ने का 'निश्चय' किया हैं।

तुम्हारी गलतियों को नजरअंदाज किया है,
कभी-कभी हमने खून का घूंट भी पिया है।
यूं हक़ जमाना 'पालकों के मन' में ठिकाना,
पहले उनकी करिए सेवा बाद में मुस्कुराना।

संजय एम तराणेकर
(कवि, लेखक व समीक्षक)

बड़ा भाई

अनायास ही इस जीवन में
कई कंधे भारी हो जाते हैं,
कम उम्र में ही कुछ लोग
घर की चहार दीवारी हो जाते हैं।

समुद्र चाहे कितना गहरा हो,
जहाज़ को डुबा न पाता है,
वैसे ही बड़ा भाई अक्सर
घर को डूबने से बचाता है।

कच्ची उम्र में सपने छोड़कर
ज़िम्मेदारियाँ ओढ़ लेता है,
अपने हिस्से की खुशियाँ
चुपचाप कहीं तोड़ देता है।

अनायास ही इस जीवन में
वो पहले कमाने जाता है,
घर की हर ज़रूरत को
अपने माथे पर उठाता है।

लेकिन सालों बाद यही दुनिया
उससे सवाल कर जाती है,
"तुमने किया ही क्या है?"
सवालों से पीड़ा बढ़ जाती है।

वो पराया-सा लगने वाला
असल में सबसे अपना होता है,
कोई पार लगा देता है घर को
कोई खुद ही डूबा होता है।

डॉ. सत्यवान सौरभ

पढ़ने का परिवेश : ज्ञान, चिंतन और व्यक्तित्व निर्माण की आधारशिला

विजय गर्ग

मनुष्य के बौद्धिक विकास में पढ़ने की आदत अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। लेकिन केवल पढ़ना ही पर्याप्त नहीं है; पढ़ने का परिवेश भी उतना ही आवश्यक है। शांत, प्रेरणादायक और संसाधनों से समृद्ध वातावरण व्यक्ति में जिज्ञासा, एकाग्रता और गहन चिंतन की क्षमता विकसित करता है।

पढ़ने का परिवेश क्या है?

पढ़ने का परिवेश उस वातावरण को कहा जाता है जहाँ व्यक्ति सहजता से पढ़ सके, समझ सके और सीखी हुई बातों पर विचार कर सके। इसमें भौतिक वातावरण, मानसिक स्थिति और सामाजिक सहयोग — तीनों का योगदान होता है।

अच्छा पढ़ने का परिवेश क्यों जरूरी है?

1. एकाग्रता बढ़ाता है – शांत वातावरण ध्यान भटकने से रोकता है।

2. समझने की क्षमता विकसित करता है – व्यवस्थित स्थान और पर्याप्त प्रकाश पढ़ने को आसान बनाते हैं।

3. जिज्ञासा को प्रोत्साहित करता है – पुस्तकों से घिरा वातावरण सीखने की इच्छा जगाता है।

4. आत्म-अनुशासन विकसित करता है – नियमित अध्ययन की आदत बनती है।

आदर्श पढ़ने के परिवेश की विशेषताएँ

1. शांत और स्वच्छ स्थान

शोर-शराबे से दूर, साफ और व्यवस्थित जगह पढ़ने के लिए उपयुक्त होती है। स्वच्छता मन को स्थिरता प्रदान करती है।

2. पर्याप्त प्रकाश और हवा

प्राकृतिक प्रकाश सबसे उत्तम होता है। अच्छी रोशनी आँखों पर तनाव कम करती है और ताजी हवा मस्तिष्क को सक्रिय रखती है।

3. उचित बैठने की व्यवस्था

आरामदायक कुर्सी और सही ऊँचाई की मेज शरीर को थकान से बचाती है, जिससे लंबे समय तक पढ़ना संभव होता है।

4. पुस्तकों की उपलब्धता

घर, विद्यालय और पुस्तकालयों में विभिन्न विषयों की पुस्तकें उपलब्ध होने से बच्चों और युवाओं की रुचि बढ़ती है।

5. डिजिटल विकर्षणों से दूरी

मोबाइल फोन और अनावश्यक स्क्रीन समय पढ़ाई में बाधा डालते हैं। पढ़ते समय इनसे दूरी बनाए रखना आवश्यक है।

परिवार और विद्यालय की भूमिका

माता-पिता बच्चों को कहानी पुस्तकें पढ़ने के लिए प्रेरित करें।

घर में "पढ़ने का समय" निर्धारित किया जा सकता है।

विद्यालयों में पुस्तकालय संस्कृति को बढ़ावा देना चाहिए।

शिक्षक विद्यार्थियों को पाठ्यपुस्तकों के अतिरिक्त पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करें।

ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में पढ़ने का वातावरण

ग्रामीण क्षेत्रों में संसाधनों की कमी हो सकती है, परंतु सामुदायिक पुस्तकालय, विद्यालय पुस्तकालय और मोबाइल पुस्तकालय इस कमी को दूर कर सकते हैं। शहरी क्षेत्रों में संसाधन अधिक होते हैं, लेकिन डिजिटल व्याकुलता एक बड़ी चुनौती बन जाती है।

डिजिटल युग में पढ़ने का परिवेश

ई-पुस्तकें और ऑनलाइन संसाधन ज्ञान का विस्तार कर रहे हैं, परंतु संतुलन आवश्यक है। स्क्रीन और मुद्रित पुस्तकों दोनों का संतुलित उपयोग सर्वोत्तम परिणाम देता है।

निष्कर्ष

पढ़ने का अनुकूल परिवेश व्यक्ति के बौद्धिक और नैतिक विकास की नींव रखता है। यह केवल परीक्षा में सफलता का साधन नहीं, बल्कि जीवन भर सीखते रहने की आदत विकसित करने का माध्यम है। यदि परिवार, विद्यालय और समाज मिलकर पढ़ने की संस्कृति को बढ़ावा दें, तो एक जागरूक, संवेदनशील और ज्ञानसम्पन्न समाज का निर्माण संभव है।

पढ़ने का सही वातावरण केवल किताबों से नहीं बनता — यह सोच, अनुशासन और प्रेरणा से निर्मित होता है।

डॉ विजय गर्ग सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

हमारा गुस्सा और क्रोध हमारे जीवन की सभी समस्याओं की वजह में से एक है

आज के युग में हर व्यक्ति को जीवन के किसी न किसी पड़ाव में विपरीत परिस्थितियों का निर्माण होने के कारणों में कहीं ना कहीं एक कारण उसका गुस्सा या क्रोध भी होगा। अगर हम अत्यंत संवेदनशीलता और गहनता से उत्पन्न हुई उन परिस्थितियों की गहनता से जांच करेंगे तो हमें जरूर यह कारण महसूस होगा। गुस्से और क्रोध का वह छोटा सा पल ऐसी अनेकों विकराल स्थितियों और परिस्थितियों को पैदा कर देता है, जिसकी हमें उम्मीद भी नहीं रहती और फिर बड़े बुजुर्ग लोग कहते हैं ना कि, जब चिड़िया चुग गई खेत अब पैछतावे का होए। मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र यह मानता हूं कि हमें उस गुस्से क्रोध के उस पल को काबू में रखने के मंत्र सीखने होंगे जो कि आसान है। सबसे पहले तो हमारी यह सव प्रतिशत कोशिश होनी चाहिए कि उस स्थिति को पैदा ही ना होने दें, जिसके कारण क्रोध या गुस्सा या आक्रोश उत्पन्न हो। परंतु यह भी उचित बात है कि, हम किसी भी परिस्थिति को कितना भी रोके, परंतु स्थिति उत्पन्न हो ही जाती है, या अन्य कोई यह स्थिति उत्पन्न कर ही देता है, तो ऐसी परिस्थिति में सबसे सरल मंत्र है उस परिस्थिति की हर बात, हर स्थिति को अत्यंत ही सहजता और सरलता से लें और गुस्से या क्रोध या आक्रोश को जगने से पहले ही तुरंत उसे समाप्त कर दें। उसके लिए सहजता व सरलता इन दो शब्दों या मंत्रों को गांठ बांध के रखना ही होगा।

साथियों जब शरीर क्रोध के आवेग में काबू हो जाता है तो मनुष्य विचार शून्य हो जाता हैं. उसे कुछ भी सूझता नहीं है जैसे मुह में आया बोल दिया अथवा जो हाथ में आया उसे चला दिया जाता हैं. ऐसे करने से बाद में पछताने के सिवाय कुछ भी हाथ नहीं लगता हैं. यदि आप क्रोध को नियंत्रित नहीं कर पाते है तो यह आपके स्वास्थ्य के लिए बेहद हानिकारक है, यह आपके ब्लड प्रेशर को अधिक करने के साथ ही कई व्याधियों को जन्म भी दे सकता हैं क्रोध को कायरता की निशानी भी कहा जाता है, इसे स्वास्थ्य के लिए बेहद हानिकारक भी माना गया हैं. जिन्हें विभिन्न परिस्थितियों में धैर्य एवं साहस की कमी होती है वे क्रोधित होते हैं। यह संताप विकलता की दशा हैं. एक क्रुद्ध व्यक्ति के सोचने समझने और विचारने की शक्ति शून्य हो जाती हैं। साथियों, मेरा ऐसा निजी मानना है कि जितनी भी विपरीत, हानिकारक, कष्टदाई परिस्थितियां उत्पन्न होती है, उसका मूल कारण गुस्सा, आक्रोश, क्रोध में उठाया गया हिंसात्मक कदम होता है, जिसकी परिणीति में उन विपरीत परिस्थितियों का जन्म होता है। और अगर उन परिस्थितियों, स्थितियों को फलने फूलने के लिए, कथित प्रोत्साहन मिला तो फिर विकराल रूप बन इंसान को सबसे बड़ा और खतरनाक प्राणी बना देता है, जिसे आज की स्थिति में अपराध के जगत का डॉन या कुख्यात अपराधी की संज्ञा दी जाती है। साथियों, हम अपने रूटीन जीवन के हर क्षण में काफी नजदीकी से देखते होंगे कि कोई भी टॉपिक में, किसी भी क्षेत्र में, किसी भी विषय में, बात तभी बिगड़ जाती है जब वहां तावबाज़ी अर्थात गुस्सा या क्रोध का जन्म होता है, और बात बढ़ कर कहासुनी, मारपीट, हत्या की कोशिश, हत्या, जख्मी, घायल इत्यादि से पुलिस, जेल, और मामला अदालतों की दहलीज तक जा पहुंचती है। और सामाजिक-आर्थिक नैतिक, हानि, मानहानि अलग होती है। साथियों, सोचिए इतनी भारी कीमत चुकानी होती है, मात्र एक छोटे से पल की जिस पर आसानी से नियंत्रण किया जा सकता था। जो भी व्यक्ति उपरोक्त विपरीत प्रक्रिया, गुस्से, क्रोध, से जेल तक में बंदी बनाया जाता है या सजा काटता है या अदालतों के चक्कर काटता है, विशेषज्ञों और अधिवक्ताओं के पीछे घूमता है, अगर हम उसकी प्रतिक्रिया जानना चाहेंगे तो हमें निर्णय करने में आसानी होगी कि मामला गुस्से और क्रोध की परिणीति का है और कहीं ना कहीं उस व्यक्ति के मन में गुस्से और क्रोध के प्रति पछतावे की बात सामने आती है।

अमेरिका से मुक्त व्यापार समझौता : साम्राज्यवाद के आगे लाल गलीचा बिछाकर आत्म-समर्पण

(आलेख : वीजू कृष्णन, अनुवाद : संजय पराते)

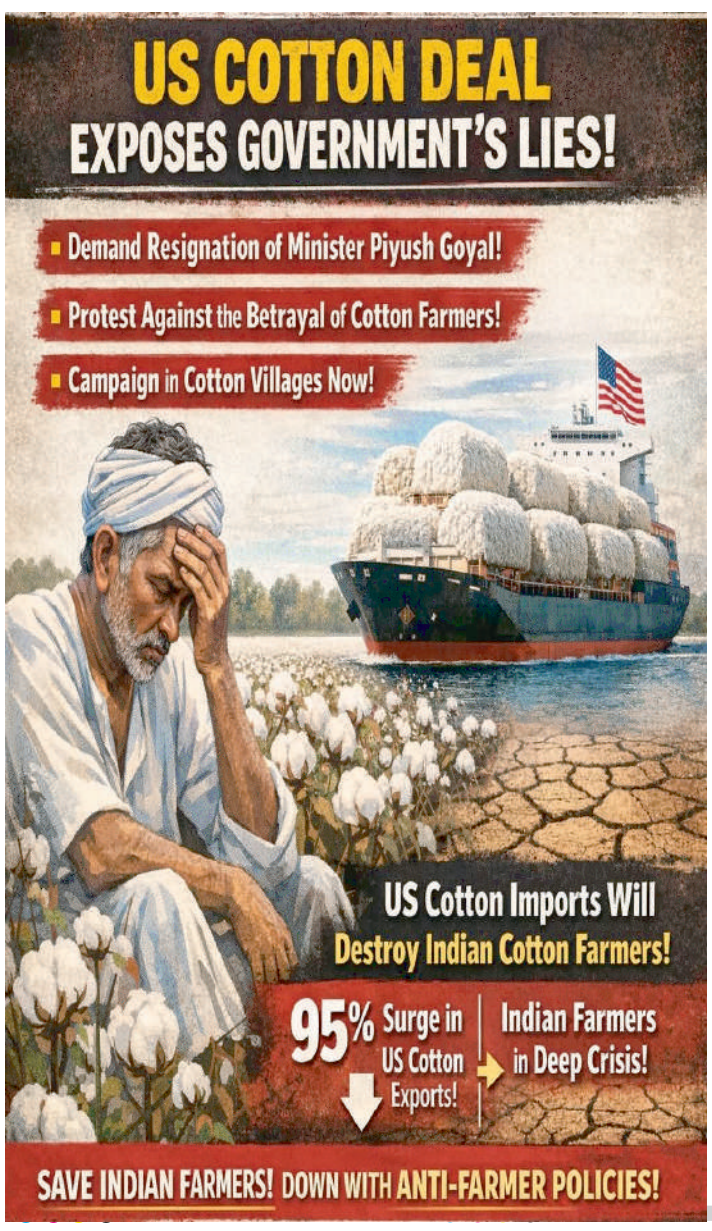

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अमेरिकी साम्राज्यवाद के हुक्म के आगे आत्म-समर्पण कर दिया है और भारत की संप्रभुता से गंभीर रूप से समझौता करते हुए एक अपमानजनक और एक-तरफ़ा व्यापार सौदे के लिए राज़ी हो गए हैं। डोनाल्ड ट्रंप ने अपने सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म ट्रुथ सोशल पर एक-तरफ़ा तौर पर जिस "डील" का ऐलान किया है और जिसका नरेंद्र मोदी ने एक्स पर स्वागत किया है, वह ऐसा लगता है, जैसे हमारे गले को जूते से दबाकर समझौते के लिए बाध्य किया गया है। अमेरिकी राष्ट्रपति ने घोषणा की है कि भारतीय प्रधानमंत्री रूस से तेल न खरीदने के लिए राज़ी हो गए हैं, बदले में अमेरिका 18% का "कम" पारस्परिक शुल्क लगाएगा, भारत अपने शुल्क को शून्य करेगा और गैर-शुल्क बाधाओं को दूर करेगा। अपनी घोषणा में ट्रंप ने यह भी बताया कि प्रधानमंत्री मोदी ने अमेरिकी ऊर्जा, प्रौद्योगिकी, कृषि, कोयला और कई दूसरे उत्पादों के 500 अरब डॉलर से ज़्यादा की खरीद के अलावा, बहुत ऊँचे स्तर पर "अमेरिका से खरीद₹ का वादा किया है। मोदी ने आगे खुशी ज़ाहिर की कि 'मेड इन इंडिया' उत्पादों पर अब कम शुल्क लगेगा और भारत के 140 करोड़ लोगों की ओर से तरफ से उन्होंने ट्रंप को धन्यवाद भी कहा। इतिहास में शायद ही कभी ऐसा हुआ हो कि इस तरह से देश को बेचने को फायदेमंद बताया गया हो और एक असमान सौदे को इतने गुलामी भरे एहसान के साथ स्वीकार गया हो। इतनी बड़ी असर वाली किसी सौदेबाजी की घोषणा पहली बार सोशल मीडिया के जरिए की गई है और संसद या राज्यों के साथ बिना किसी विचार-विमर्श के गुप्त तरीके से की गई है।

जिन देशों ने लंबे साम्राज्यवाद-विरोधी संघर्षों के बाद अपनी आज़ादी हासिल की हैं, उन्हें ऐसे कई अनुभव हुए हैं, जहाँ उपनिवेशवादी शासन ने सीधे उनके अधिकारों और घरेलू खेती के साथ-साथ उद्योगों को बचाने या बढ़ावा देने की उनकी क्षमता को रोककर रखा था। खेती की जान-बूझकर उपेक्षा, निःऔद्योगीकरण के साथ उपनिवेशवादी लूट, संसाधनों की बर्बादी और विनिर्मित सामानों की डंपिंग हुई, जिसमें अक्सर सैन्य ताकत का भी हाथ होता था। पहले के जमाने में देशों पर गुलामी और उनके बाजारों तक बिना रोक-टोक पहुंच के कारण संबंधित देशों के लोग उनके सामानों के ग्राहक बन जाते थे। अब यह जमाना एक अलग रूप में वापस आ रहा है। आज फ़र्क यह है कि भाजपा-आरएसएस की अगुवाई वाली राजग सरकार जिस भारतीय शासक वर्ग का प्रतिनिधित्व कर रही है, वह बिना रोक-टोक के बाजार तक पहुँच, बिना रोक-टोक के मुनाफ़े और भारत के करोड़ों किसानों की ज़िंदगी और रोज़ी-रोटी की बिल्कुल भी चिंता न करने के वादे के साथ साम्राज्यवाद के लिए लाल गलीचा बिछा रही है। अगर उस समय उपनिवेशवादी शासन आर्थिक गिरावट के लिए सीधे ज़िम्मेदार था, तो अब असमान व्यापार सौदा भी वैसा ही असर डालेंगी।

भारतीय किसानों की ज़िंदगी गिरवी रखने वाला असमान सौदा

भारत-अमेरिका व्यापार पर अंतरिम रूपरेखा समझौता से पहले इंग्लैड और यूरोपियन यूनियन के साथ दूसरे कई असमान मुफ्त व्यापार समझौते हुए हैं और इसके बाद ऐसे कई समझौते और होंगे। यूरोपियन यूनियन के बजट का सबसे बड़ा आबंटन साझा कृषि कार्यक्रम के लिए आबंटन है -- यह 2014 और 2020 के बीच कुल खर्च का लगभग 38 प्रतिशत था, जो कुल 408.31 अरब यूरो (43.8 लाख करोड़ रूपये) था; 2021 से 2027 के लिए यह रकम लगभग 387 अरब यूरो (41.5 लाख करोड़ रूपये) या कुल बजट का 31 प्रतिशत तय है। भारत में हाल के संघीय बजट में कृषि और उससे जुड़े क्षेत्रों के लिए 1.37 लाख करोड़ रूपये या बजट का सिर्फ़ 2.7 प्रतिशत आबंटित किया गया है।

2026 में खेती के कार्यक्रमों के लिए अमेरिकी संघीय सरकार द्वारा लगभग 18.65 लाख किसानों को 44.3 अरब डॉलर (4,02,132 करोड़ रूपये) का भुगतान करने का अनुमान है। इसका मतलब है कि हर व्यक्ति को 23,753 डॉलर या लगभग 21,56,000 रूपये की सब्सिडी मिलेगी। भारत में खेती की सब्सिडी लगभग 57.5 अरब डॉलर (लगभग 5 लाख करोड़ रूपये) है और यहाँ लगभग 14.6 करोड़ किसान हैं। एक भारतीय किसान के लिए यह सब्सिडी लगभग 373 डॉलर या लगभग 34,000 रुपए होगी। अमेरिका में खेत का औसत आकार 469 एकड़ है, जबकि 2000 एकड़ से ज़्यादा के खेत कुल खेती की ज़मीन का 61 प्रतिशत है। अमेरिका में 3,50,000 डॉलर या लगभग 3.18 करोड़ रूपये से कम की नगद आय करने वाले किसानों को छोटाबकिशन माना जाता है और इतनी आय वाले "छोटे खेत" सभी खेतों का लगभग 85 प्रतिशत हिस्सा बनाते हैं। भारत में खेतों का औसत आकार लगभग 2.67 एकड़ है और 86 प्रतिशत लोगों के पास 5 एकड़ से कम ज़मीन है, और सरकार के दावों को यदि सच माना जाएं, तो वे 1,64,000 रूपये या लगभग 1807 डॉलर से कम कमाते हैं। तेज़ी से कम होती सरकारी मदद के साथ खराब हालात में जी रहे गरीब भारतीय किसान को अमेरिका के बहुत ज़्यादा सब्सिडी वाले अमीर किसानों और कृषि-व्यापार के साथ सीधे मुकाबले में खड़ा होना पड़ेगा।

अमेरिका-भारत संयुक्त बयान किसानों के इस सबसे बुरे डर की पुष्टि करता है कि भाजपा-राजग सरकार ने भारत के किसानों की ज़िंदगी और रोजी-रोटी को गिरवी रख दिया है। इसने एक बार फिर अमेरिकी साम्राज्यवाद और घरेलू एकाधिकार के आगे अपनी पूरी गुलामी दिखाई है। यह तब है, जब पहले का भी अनुभव है कि भारत-श्रीलंका मुक्त व्यापार समझौता और भारत-आसियान मुक्त व्यापार समझौते का भारतीय किसानों, खासकर रबर, चाय, कॉफी, काली मिर्च और दूसरे मसाला उत्पादक किसानों पर बुरा असर पड़ा है। शुल्क-मुक्त आयात की वजह से कीमतें गिर गईं थीं और खासकर केरल राज्य में कई किसानों ने आत्महत्या कर ली थीं।

पहले ही, 2024-25 (अक्टूबर से सितंबर) के समय भारत का कपास आयात अब तक के सबसे ऊंचे स्तर पर, 41.3 लाख गांठ तक पहुंच गया है। भारत का सबसे बड़ा कपास निर्यातक अब अमेरिका बन गया है, जिसने 2023-24 और 2024-25 के बीच 8,56,000 गांठों का निर्यात किया है, जो 200 प्रतिशत की बढ़ोतरी है। इसके ठीक बाद ब्राज़ील और ऑस्ट्रेलिया का नंबर आता है, जिन्होंने क्रमशः 8,54,000 और 8,49,000 गांठों का निर्यात किया है। ट्रंप के टैरिफ युद्ध के दबाव में आकर, आयात में भारी बढ़ोतरी के बावजूद, केंद्र सरकार ने 2025-26 में कपास पर 11 प्रतिशत आयात शुल्क में छूट देने का ऐलान किया, जिससे अमेरिका से आयात में 95 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई है। अमेरिका से कच्चे कपास का लगातार आयात भारतीय किसानों के लिए कीमतों में और गिरावट लाएगा और संकट से जूझ रहे, आत्महत्या करने वाले कपास किसानों के खेतों में कर्ज़ बढ़ेगा और किसानों की आत्महत्याएं भी बढ़ेंगी। जब संयुक्त किसान मोर्चा के एक प्रतिनिधिमंडल ने महाराष्ट्र के आत्महत्या के लिए अभिशप्त विदर्भ इलाके का दौरा किया, तो हमने देखा कि कपास के साथ-साथ सोयाबीन की कीमतों में भी भारी गिरावट आई है, जो एक और ऐसी फसल है, जिसका भारत को निर्यात करने के लिए अमेरिका बहुत उत्सुक है।

केंद्रीय वाणिज्य और उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने भाजपा-राजग सरकार के इरादे साफ कर दिए हैं। उन्होंने कहा है कि, "भारत के पास अमेरिका से कच्चा कपास खरीदने की सुविधा है, तो उससे तैयार कपड़ा उत्पादों का निर्यात शून्य प्रतिशत पारस्परिक शुल्क पर स्वीकार किया जाएगा", और "जब भारत-अमेरिका मुक्त व्यापार अंतरिम समझौता को अंतिम रूप दे दिया जाएगा, तो भारत को बांग्लादेश को दी गई छूट की तरह ही लाभ मिलेगा"। इससे यह झूठ पूरी तरह से सामने आ जाता है कि "खेती अमेरिकी व्यापार समझौते के दायरे से बाहर है" और "प्रधानमंत्री किसानों के हितों से कभी समझौता नहीं करेंगे।₹ सरकार साफ़ तौर पर भारतीय उद्योगपतियों को अमेरिका से कपास आयात करने के लिए बढ़ावा देकर शासक वर्ग के हितों को आगे बढ़ा रही है। यह तर्क कि किसानों के हितों का नुकसान नहीं होगा, क्योंकि कुल अमेरिकी निर्यात काफ़ी सीमित है, और अगर भारत पूरी तरह से आयात शुल्क हटा भी देता है, तो भी घरेलू कपास की खपत पर कोई खास असर नहीं पड़ेगा, पूरी तरह से गलत है। यह इस बात को नज़रअंदाज़ करता है कि बढ़े हुए आयात का घरेलू कपास की कीमतों पर क्या असर पड़ेगा -- ठीक वैसे ही जैसे भारत-आसियान मुक्त व्यापार समझौता के बाद केरल में रबर किसान तबाह हो गए थे। बिना रोक-टोक वाले वैश्विक प्रतिस्पर्धा के सामने, भारतीय कपास किसान अमेरिका के भारी सब्सिडी और आधुनिक प्रौद्योगिकी वाले कपास उत्पादकों के साथ मुकाबला नहीं कर पाएंगे। यह याद रखना चाहिए कि भारत में चल रहे कृषि संकट के कारण आत्महत्या करने वाले किसानों में से बहुत ज़्यादा संख्या महाराष्ट्र, गुजरात, तेलंगाना, कर्नाटक और मध्य प्रदेश जैसे कपास उगाने वाले इलाकों से आती है।

पीयूष गोयल ने किसानों को गुमराह करने के लिए झूठ और धोखे का सहारा लिया है। उन्होंने यह दावा किया है कि खेती के क्षेत्र में अमेरिका को कोई छूट नहीं दी गई है, जबकि भारत-अमेरिका संयुक्त घोषणा का पहला पैराग्राफ ही कुछ और कहता है। इस समझौते से असल में, बड़े अमेरिकन कृषि व्यापारियों के और अमेरिकन किसानों के सस्ते, बहुत ज़्यादा सब्सिडी वाले उत्पाद भारतीय बाजार में भर जाएंगे, जिससे कीमतें गिर जाएंगी। इस घोषणा में कहा गया है : "भारत सभी अमेरिकी औद्योगिक सामान और अमेरिका के कई तरह के खाने और खेती के उत्पाद पर शुल्क खत्म कर देगा या कम कर देगा, जिसमें सूखे डिस्टिलर्स ग्रेन, जानवरों के चारे के लिए लाल ज्वार, मेवा, ताज़े और प्रसंस्कृत फल, सोयाबीन तेल, शराब और स्पिरिट, और दूसरे उत्पाद शामिल हैं।" यह किसी के भी अनुमान पर छोड़ दिया गया है कि "दूसरे उत्पाद" में क्या-क्या शामिल होगा। भारत के अनाज किसानों के लिए खतरनाक बात यह है कि इस बारे में कोई साफ बयान नहीं है कि अनाज पर शुल्क सुरक्षा बरकरार रखा जाएगा। इसका मतलब हो सकता है कि भारत का कृषि बाजार अमेरिका के शिकारी कृषि व्यापारियों के लिए पूरी तरह से खोल दिया जाएगा। ऐसी कोई भी घटना किसानों की रोज़ी-रोटी को खतरे में डाल देगी और भारत की खाद्य सुरक्षा से भी समझौता होगा। इसका नतीजा यह होगा कि 'निवाले के लिए जहाज (शिप टू माउथ)' वाले दिन वापस आ जाएँगे और पीएल-480 जैसी बेइज़्ज़ती वाली योजनाओं पर निर्भरता बढ़ जाएगी।

भारत ने अगले पांच सालों में अमेरिका से 500 अरब डॉलर का सामान खरीदने का भी वादा किया है, जिसका मतलब है कि इस एग्रीमेंट के तहत उसे हर साल 100 अरब डॉलर की खरीदारी करनी होगी। अमेरिका इस सौदेबाजी का इस्तेमाल भारत के साथ व्यापार घाटे को कम करने के लिए कर रहा है और उसने भारत पर इस तरह के असमान समझौते के लिए दबाव डाला है। पीयूष गोयल इस बात से भी आसानी से बच निकलते हैं कि जहां भारत के निर्यात पर शुरू में लगभग 2.5% से कम अमेरिकी टैरिफ लगाया जाता था, वहीं बाद में अमेरिका ने एकतरफा तौर पर इन करों को 25% और कुछ सामानों पर 50% तक बढ़ा दिया, और अब इसे 18% पर ला दिया है, जो मूल टैरिफ से लगभग सात गुना ज़्यादा है। एक ओर जहां भाजपा-आरएसएस बहुत ज़्यादा जोश में हैं और पूरी तरह से आत्मसमर्पण का जश्न मना रहे हैं, वहीं अमेरिका के कृषि सचिव, ब्रुक रोलिंस ने ज़ोर देकर कहा है कि यह समझौता "भारत के बड़े बाजार में ज़्यादा अमेरिकी कृषि उत्पाद का निर्यात करने, कीमतें बढ़ाने और ग्रामीण अमेरिका में नगद लाने में मदद करेगी"। भले ही चीन, ब्राज़ील और दूसरे देश ट्रंप के ज़बरदस्ती वाले टैरिफ़ के आगे झुकने से मना कर रहे हैं, लेकिन संघ परिवार, जो साम्राज्यवाद के साथ सहयोग करने की अपनी विरासत पर कायम है, ने एक बार फिर भारत के लोगों को धोखा दिया है। यह समझौता ट्रंप के 'अमेरिका को फिर से महान बनाने' (मागा) की योजना को तेज़ी से आगे बढ़ा रहा है।

ये असमान व्यापार समझौता वही काम करने जा रही हैं, जो 3 कृषि कानून नहीं कर पाए। इसका नतीजा यह होगा कि किसान कंगाल हो जाएंगे और उन्हें बेदखल कर दिया जाएगा। उन्हें मुश्किल हालात में शहरों में जाकर, पूंजीपतियों के इशारे पर, एक ऐसे माहौल में काम करने के लिए मजबूर होना पड़ेगा, जहां मजदूरों के अधिकारों की कोई बात नहीं होगी। अगर हम इनका विरोध नहीं करेंगे, तो गुलामी की जंजीरें हमारा इंतज़ार कर रही हैं। लाखों किसानों के लिए यह "करो या मरो" का पल है। इन असमान व्यापार समझौते के खिलाफ 12 फरवरी को पूरे भारत में लोग सड़कों पर उतर आए थे। सीपीआई(एम) और वामपंथ के साथ-साथ लोकतांत्रिक पार्टियां, वर्गीय संगठनों और जन संगठनों के साथ-साथ मेहनतकश लोगों की मुद्दों पर आधारित एकता – संयुक्त किसान मोर्चा, केंद्रीय ट्रेड यूनियनों और कृषि और ग्रामीण मजदूरों के मंच -- ने भी सही मायने में एक मज़बूत संघर्ष विकसित करने और इन कदमों का विरोध करने का फैसला किया है। इस समझौते के खिलाफ सबसे बड़ी एकता बनाई जाएगी और 24 मार्च के दिल्ली चलो अभियान को व्यापक रूप से सफल बनाने के लिए पूरी ताकत लगाई जाएगी।

(लेखक माकपा के पोलिट ब्यूरो सदस्य और अखिल भारतीय किसान सभा के महासचिव हैं। अनुवादक छत्तीसगढ़ किसान सभा के उपाध्यक्ष हैं।

चिप्स की जंग में भारत की एंट्री

डॉ. प्रियंका सौरभ

भारत और अमेरिका के बीच सेमीकंडक्टर तथा उन्नत तकनीकी सहयोग को लेकर हुआ हालिया करार केवल एक द्विपक्षीय समझौता नहीं है, बल्कि यह बदलते वैश्विक शक्ति-संतुलन, तकनीकी प्रभुत्व और आर्थिक सुरक्षा की दिशा में एक निर्णायक कदम के रूप में देखा जाना चाहिए। इक्कीसवीं सदी में जिस तरह तेल को बीसवीं सदी की सबसे रणनीतिक वस्तु माना गया था, उसी तरह आज सेमीकंडक्टर को आधुनिक दुनिया की रीढ़ कहा जा सकता है। मोबाइल फोन से लेकर मिसाइल प्रणाली, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस से लेकर ऑटोमोबाइल उद्योग तक—हर क्षेत्र में चिप्स की अनिवार्यता ने इसे भू-राजनीति का केंद्र बना दिया है। ऐसे में भारत का पैक्स सिलिका जैसे ढांचों में शामिल होना और अमेरिका के साथ गहरा सहयोग स्थापित करना दूरगामी महत्व रखता है।

पिछले कुछ वर्षों में वैश्विक सेमीकंडक्टर आपूर्ति श्रृंखला की कमजोरियां खुलकर सामने आई हैं। कोविड-19 महामारी के दौरान चिप संकट ने यह स्पष्ट कर दिया कि कुछ गिने-चुने देशों और कंपनियों पर अत्यधिक निर्भरता पूरी वैश्विक अर्थव्यवस्था को अस्थिर कर सकती है। इस निर्भरता का सबसे बड़ा केंद्र चीन और ताइवान क्षेत्र रहा है। अमेरिका और उसके सहयोगी देशों ने इसे केवल आर्थिक नहीं, बल्कि राष्ट्रीय सुरक्षा के खतरे के रूप में देखा है। इसी पृष्ठभूमि में भारत जैसे लोकतांत्रिक, स्थिर और तेजी से उभरते बाजार वाले देश की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है।

भारत लंबे समय तक सेमीकंडक्टर वैल्यू चेन में एक सीमित भूमिका निभाता रहा है, जहां उसका योगदान मुख्यतः चिप डिजाइन और आईटी सेवाओं तक सीमित था। हालांकि निर्माण, कच्चे माल की शुद्धता, और अत्याधुनिक फैब्रिकेशन जैसी क्षमताओं में देश पीछे रहा। हालिया समझौते इस कमी को दूर करने की दिशा में संकेत देते हैं। अमेरिका के साथ साझेदारी भारत को न केवल तकनीकी ज्ञान और निवेश उपलब्ध कराएगी, बल्कि वैश्विक मानकों के अनुरूप एक मजबूत और भरोसेमंद सप्लाई चेन का हिस्सा भी बनाएगी।

इस सहयोग का एक महत्वपूर्ण पहलू दुर्लभ खनिजों और उच्च गुणवत्ता वाले सिलिकॉन जैसे कच्चे माल से जुड़ा है। सेमीकंडक्टर निर्माण के लिए जिन तत्वों की आवश्यकता होती है, उनमें से कई का वैश्विक नियंत्रण चीन के पास है। यह स्थिति रणनीतिक जोखिम पैदा करती है। भारत-अमेरिका सहयोग इस निर्भरता को कम करने और वैकल्पिक स्रोत विकसित करने की दिशा में अहम कदम है। भारत के पास खनिज संसाधनों की संभावनाएं हैं, जिन्हें तकनीक और निवेश के माध्यम से वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला से जोड़ा जा सकता है।

आर्थिक दृष्टि से यह करार भारत के लिए बड़े अवसर खोलता है। सेमीकंडक्टर उद्योग पूंजी-प्रधान होने के साथ-साथ रोजगार सृजन की अपार क्षमता रखता है। एक फैब्रिकेशन यूनिट के आसपास पूरा एक औद्योगिक पारिस्थितिकी तंत्र विकसित होता है, जिसमें आपूर्तिकर्ता, अनुसंधान संस्थान, स्टार्टअप्स और कुशल मानव संसाधन शामिल होते हैं। इससे न केवल प्रत्यक्ष रोजगार बढ़ेगा, बल्कि उच्च तकनीकी कौशल वाले युवाओं के लिए नए रास्ते खुलेंगे। यह भारत की जनसांख्यिकीय लाभांश को वास्तविक आर्थिक शक्ति में बदलने में सहायक हो सकता है।

रणनीतिक स्तर पर यह साझेदारी भारत की विदेश नीति में भी एक नया आयाम जोड़ती है। भारत लंबे समय से "रणनीतिक स्वायत्तता" की नीति का पालन करता आया है, जहां वह किसी एक शक्ति गुट पर निर्भर न रहते हुए अपने हितों के अनुसार सहयोग करता है। अमेरिका के साथ यह तकनीकी सहयोग उसी संतुलन का उदाहरण है। यह भारत को पश्चिमी देशों के साथ निकटता तो देता है, लेकिन साथ ही उसे वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला में एक स्वतंत्र और महत्वपूर्ण स्तंभ के रूप में स्थापित करता है। इससे भारत की वैश्विक सौदेबाजी क्षमता भी मजबूत होती है।

हालांकि इस पूरे परिदृश्य में चुनौतियां भी कम नहीं हैं। सेमीकंडक्टर निर्माण अत्यंत जटिल और लागत-भारी प्रक्रिया है, जिसमें निरंतर नवाचार, स्थिर नीतिगत समर्थन और दीर्घकालिक निवेश की आवश्यकता होती है। भारत में बुनियादी ढांचे, बिजली की गुणवत्ता, जल उपलब्धता और कुशल श्रमबल जैसी समस्याओं को हल किए बिना इस उद्योग में वैश्विक प्रतिस्पर्धा संभव नहीं है। इसके अलावा, तकनीकी हस्तांतरण और बौद्धिक संपदा अधिकारों से जुड़े मुद्दे भी संवेदनशील हैं, जिनका संतुलित समाधान आवश्यक होगा।

एक और महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि क्या भारत इस सहयोग को केवल आयात-प्रतिस्थापन तक सीमित रखेगा या इसे नवाचार-आधारित आत्मनिर्भरता में बदल पाएगा। यदि भारत केवल विदेशी कंपनियों के लिए एक उत्पादन स्थल बनकर रह जाता है, तो दीर्घकालिक लाभ सीमित होंगे। आवश्यकता इस बात की है कि देश में अनुसंधान और विकास को समानांतर रूप से बढ़ावा दिया जाए, विश्वविद्यालयों और उद्योग के बीच गहरा तालमेल बने, और घरेलू स्टार्टअप्स को इस पारिस्थितिकी तंत्र में स्थान मिले। तभी भारत वास्तव में सेमीकंडक्टर क्षेत्र में वैश्विक नेतृत्व की ओर बढ़ सकता है।

भू-राजनीतिक संदर्भ में यह करार एक स्पष्ट संदेश भी देता है। यह संदेश केवल चीन को नहीं, बल्कि पूरी दुनिया को है कि लोकतांत्रिक देश मिलकर तकनीकी आपूर्ति श्रृंखला को अधिक सुरक्षित, पारदर्शी और विविधतापूर्ण बनाने की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं। हालांकि भारत को यह भी सुनिश्चित करना होगा कि वह किसी नए ध्रुवीकरण का मोहरा न बने, बल्कि अपनी विकासात्मक प्राथमिकताओं को केंद्र में रखे।

अंततः, भारत और अमेरिका के बीच सेमीकंडक्टर सहयोग भविष्य की उस दुनिया की झलक देता है जहां तकनीक, अर्थव्यवस्था और सुरक्षा आपस में गहराई से जुड़ी होंगी। यह भारत के लिए एक अवसर है कि वह खुद को केवल एक बड़ा बाजार नहीं, बल्कि एक विश्वसनीय तकनीकी साझेदार के रूप में स्थापित करे। सफलता इस बात पर निर्भर करेगी कि नीतिगत इच्छाशक्ति, संस्थागत क्षमता और दीर्घकालिक दृष्टि को किस हद तक व्यवहार में उतारा जाता है। यदि यह संतुलन साध लिया गया, तो यह करार भारत की तकनीकी यात्रा में मील का पत्थर साबित हो सकता है।

(डॉ. प्रियंका सौरभ, पीएचडी (राजनीति विज्ञान), कवयित्री एवं सामाजिक चिंतक हैं।)

IMC कॉन्क्लेव में केंद्रीय मंत्री धर्मेंद्र का सम्बोधन, बरिष्ठ पत्रकार मनोरंजन सासमल को ट्रफी मिला

हिम्मत लोकतंत्र को मजबूत करने और देश के निर्माण में मदद करेगा

मनोरंजन शासमल, स्टेट हेड ओड़िशा

नईदिल्ली: इंडियन मीडिया कांग्रेस (IMC) के तीसरे सालाना सम्मेलन के मौके पर, पहला सेशन जॉइंट स्टाफ जर्नलिस्ट्स एसोसिएशन के साथ मिलकर लोकल कॉन्स्टिट्यूशन क्लब में हुआ। इसका उद्घाटन करते हुए, पूर्व केंद्रीय सूचना और प्रसारण और संसदीय मामलों के मंत्री मुख्तार अवास नकवी ने कहा, ₹मुझे उम्मीद और विश्वास है कि एक विकसित भारत और एक विकसित ओडिशा के लिए ओडिशा से राजधानी दिल्ली आए अलग-अलग मीडिया आउटलेट्स के पत्रकारों और एडिटर्स की कोशिशें सफल होंगी ₹ बाद में, मुख्य अतिथि के तौर पर, केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र ने मीडिया और लोकतंत्र को मजबूत करने और देश के निर्माण में अहम भूमिका निभाई, जिसे एक साथ लाया है हिम्मत डेली अखबार हिम्मत, जो ओडिशा के एक ग्रामीण इलाके से दिल्ली पहुंचा है। कार्यक्रम की अध्यक्षता इंडियन मीडिया कांग्रेस के वाइस प्रेसिडेंट रजनीकांत सामंतराय ने की, जबकि प्रेसिडेंट के तौर पर अपने भाषण में डॉ. पृथ्वी मोहन सामंतराय ने पत्रकारों के कर्तव्यों पर रोशनी डाली। इसी तरह, IMC का दूसरा सेशन नई दिल्ली के गुड़गांव राज जगन्नाथ मंदिर कॉन्फ्रेंस हॉल में हुआ। चीफ गेस्ट इंडियन मेटियोरोलॉजिकल डिपार्टमेंट के DG मृत्युंजय महापात्रा थे, कीनोट स्पीकर केरल के पूर्व DGP डॉ. संजीव पट्टयोशी थे, गेस्ट ऑफ ऑनर सेंट्रल इन्फॉर्मेशन एंड ब्रॉडकास्टिंग डिपार्टमेंट के पूर्व ADG के.एस. धातुबाला थे, और UWJ प्रेसिडेंट संजय दास, एडिटर प्रद्युम्न दास, ट्रेजरर प्रसन्ना प्रुस्ती और हिम्मत एडिटर कमलाकांत दास ने अपनी स्पीच दी। इस मौके पर सीनियर जर्नलिस्ट विनोद ससमल और विभूति भूषण कवदेई को गेस्ट्स ने बुके, गिफ्ट और ट्रॉफी देकर सम्मानित किया। ओडिशा से सत्तर से ज़्यादा जर्नलिस्ट मौजूद थे, जबकि दुनिया भर से सैकड़ों जर्नलिस्ट्स ने हिस्सा लिया। इनॉगरेशनल एड्रेस आकांक्षा मंच ने दिया, जिन्होंने इनविटेशन और वेलकम स्पीच दी, और आखिर में जर्नलिस्ट प्रवर्ता प्रसूति ने धन्यवाद दिया।

'ऑपरेशन साइबर कच्छ': 3625 खच्चर (बेनामी) बैंक अकाउंट चेक किए गए, 187 आरोपी गिरफ्तार

मनोरंजन शासमल, स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : साइबर क्राइम पर रोक लगाने के लिए ओडिशा पुलिस का शुरू किया गया स्पेशल ऑपरेशन 'ऑपरेशन साइबर कच्छ' 10वें दिन भी ज़ोर-शोर से जारी है।

स्टेट डायरेक्टर जनरल ऑफ़ सिक्योरिटी श्री योगेश बहादुर खुरानिया के निर्देश पर, डिस्ट्रिक्ट SP और DCP की सीधी निगरानी में डिस्ट्रिक्ट साइबर क्राइम यूनिट्स यह कार्रवाई कर रही हैं। साइबर क्राइम यूनिट, CID क्राइम ब्रांच इस पूरे ऑपरेशन को को-ऑर्डिनेट कर रही हैं। इस ऑपरेशन का मुख्य मकसद साइबर क्रिमिनल्स के फाइनेंशियल इंफ्रास्ट्रक्चर को कमज़ोर करना है।

अब तक 'ऑपरेशन साइबर कच्छ' के तहत पूरे राज्य में कुल 3,625 खच्चर (बेनामी) बैंक अकाउंट चेक किए जा चुके हैं। खच्चर अकाउंट से जुड़े कुल 275 मामले, चेक निकालने से जुड़े 8 मामले और नकली SIM PoS वेरिफिकेशन से जुड़े 7 मामले दर्ज किए गए हैं। अब तक इस प्रोसेस में 187 आरोपियों को गिरफ्तार किया गया है, जबकि 1,075 संदिग्ध सहयोगियों और अकाउंट होल्डर्स (नए केस और 84 पुरानी FIR) को लीगल नोटिस जारी किए गए हैं।

इस ऑपरेशन के दौरान, जगतसिंहपुर जिला पुलिस ने 20 गुमनाम अकाउंट चेक किए हैं और 1 साइबर केस रजिस्टर किया है। इसी तरह, जाजपुर जिला पुलिस ने 44 अकाउंट चेक किए हैं और 4 केस रजिस्टर किए हैं और 47 लोगों को नोटिस जारी किए हैं। इसी तरह, केंद्रपाड़ा जिला पुलिस ने 88 अकाउंट चेक किए हैं और 5 केस रजिस्टर किए हैं और 67 लोगों को नोटिस जारी किए हैं। खोरधा जिला पुलिस ने 98 अकाउंट चेक किए हैं और 6 केस रजिस्टर किए हैं और 2 लोगों को नोटिस जारी किए हैं।

पुरी जिला पुलिस ने 71 बेनामी अकाउंट चेक किए हैं, म्यूल बैंक से जुड़े 4 केस और चेक बाउंस से जुड़ा 1 केस रजिस्टर किया है, 6 आरोपियों को गिरफ्तार किया है और 15 लोगों को नोटिस जारी किए हैं।

इसी तरह बलांगीर, झारसुगुड़ा, क्योंझर, राउरकेला, भद्रक, मयूरभंज, UPD भुवनेश्वर, बरहामपुर, गजपति, गंजम, अंगुल, कालाहांडी, कोरापुट, नुआपाड़ा, रायगढ़ा, कटक, नयागढ़, बरगढ़, संबलपुर, सुंदरगढ़, बौध, कंधमाल, मलकानगिरी, नबरंगपुर, देवगढ़, ढेंकनाल आदि जिलों में बेनामी अकाउंट की जांच, केस दर्ज, गिरफ्तारियां और नोटिस जारी किए जा रहे हैं।

ओडिशा पुलिस राज्य के लोगों के डिजिटल ट्रांजैक्शन की सुरक्षा के लिए हमेशा प्रतिबद्ध है। DGP श्री खुरानिया ने बताया कि ओडिशा को साइबर क्राइम फ्री बनाने के लिए आने वाले दिनों में इस अभियान को और तेज किया जाएगा।

हरियाणा में एचआईवी: पहचान मजबूत, रोकथाम अभी अधूरी

— डॉ. सत्यवान सौरभ

वित्तीय वर्ष 2025–26 में हरियाणा सरकार द्वारा 12.4 लाख से अधिक लोगों की एचआईवी जांच और 5877 पॉजिटिव मामलों की पहचान—यह तथ्य पहली दृष्टि में सार्वजनिक स्वास्थ्य तंत्र की सक्रियता, प्रशासनिक इच्छाशक्ति और नीति-स्तरीय गंभीरता का प्रमाण प्रतीत होता है। इतने बड़े पैमाने पर स्क्रीनिंग किसी भी राज्य के लिए न तो सरल होती है और न ही सहज। इसके लिए वित्तीय संसाधन, प्रशिक्षित मानवबल, संस्थागत ढांचा और निरंतर निगरानी की आवश्यकता होती है। इस दृष्टि से देखें तो यह उपलब्धि हरियाणा की स्वास्थ्य व्यवस्था की क्षमता और प्राथमिकताओं को दर्शाती है।

यह पहल इस बात का भी संकेत है कि राज्य ने एचआईवी को अब केवल "सीमित समुदायों" या "हाशिये के समूहों" से जोड़कर देखने के पुराने और संकीर्ण नजरिये से आगे बढ़कर एक व्यापक सार्वजनिक स्वास्थ्य चुनौती के रूप में स्वीकार किया है। लेकिन यही आंकड़े जब गहराई से पढ़े जाते हैं, तो वे एक साथ यह चेतावनी भी देते हैं कि संक्रमण की सामाजिक, आर्थिक और व्यवहारिक जड़ें अभी भी मजबूत बनी हुई हैं। सवाल यह नहीं है कि कितने लोगों की जांच हुई, बल्कि यह है कि संक्रमण को जन्म देने वाले कारणों पर कितनी प्रभावी रोक लगी।

राज्य में 104 एकीकृत परामर्श एवं परीक्षण केंद्र (ICTC) और 24 एंटी-रेट्रोवायरल थेरेपी (ART) केंद्रों का संचालन इस बात का संकेत देता है कि जांच के बाद मरीजों को इलाज की निरंतर श्रृंखला से जोड़ने का प्रयास किया जा रहा है। 40,000 से अधिक लोगों का नियमित उपचार यह स्पष्ट करता है कि नीति केवल घोषणाओं और काग़ज़ी योजनाओं तक सीमित नहीं है। एचआईवी जैसे दीर्घकालिक और आजीवन प्रबंधन की मांग करने वाले रोग में इलाज की निरंतरता उतनी ही महत्वपूर्ण होती है जितनी प्रारंभिक पहचान। इस मोर्चे पर हरियाणा की स्थिति अपेक्षाकृत मजबूत दिखती है, जो कई अन्य राज्यों के लिए एक सीख भी हो सकती है।

इस अभियान का सबसे सकारात्मक और दूरगामी प्रभाव गर्भवती महिलाओं की बड़े पैमाने पर जांच में दिखाई देता है। 5.65 लाख से अधिक गर्भवती महिलाओं की स्क्रीनिंग और 613 पॉजिटिव मामलों की पहचान यह दर्शाती है कि माँ-से-बच्चे में संक्रमण रोकने को गंभीरता से प्राथमिकता दी जा रही है। चिकित्सा विज्ञान यह स्पष्ट कर चुका है कि यदि समय रहते एचआईवी संक्रमित गर्भवती महिला को उपचार और परामर्श मिल जाए, तो नवजात को संक्रमण से लगभग पूरी तरह बचाया जा सकता है। यह केवल एक चिकित्सा सफलता नहीं, बल्कि सामाजिक न्याय का भी प्रश्न है, क्योंकि एचआईवी-मुक्त शिशु को उस कलंक और भेदभाव का सामना नहीं करना पड़ता, जो आज भी संक्रमित बच्चों के जीवन को सीमित कर देता है।

दिसंबर 2021 से लागू ₹2250 प्रतिमाह की वित्तीय सहायता योजना—जिसके तहत अब तक ₹54.3 करोड़ वितरित किए जा चुके हैं—यह संकेत देती है कि राज्य सरकार बीमारी को केवल चिकित्सा समस्या के रूप में नहीं देख रही। एचआईवी से प्रभावित व्यक्ति अक्सर रोजगार, सामाजिक स्वीकार्यता और आर्थिक स्थिरता—तीनों से वंचित हो जाता है। बीमारी के साथ जुड़ा सामाजिक भय और भेदभाव उसकी आजीविका के अवसरों को भी सीमित कर देता है। ऐसे में यह वित्तीय सहायता इलाज के साथ जीवन की बुनियादी गरिमा बनाए रखने का एक प्रयास है, भले ही मौजूदा आर्थिक परिस्थितियों में यह राशि अपर्याप्त प्रतीत हो।

फिर भी, कुल जांच के मुकाबले 0.47 प्रतिशत की पॉजिटिविटी दर को हल्के में नहीं लिया जा सकता। सार्वजनिक स्वास्थ्य विशेषज्ञ लंबे समय से यह मानते आए हैं कि एचआईवी के मामले अक्सर वास्तविक संख्या से कम रिपोर्ट होते हैं। सामाजिक कलंक, भय, गोपनीयता को लेकर आशंका और जानकारी की कमी के कारण बड़ी संख्या में लोग स्वैच्छिक जांच से बचते हैं। ऐसे में सामने आए 5877 मामले संभवतः समस्या की पूरी तस्वीर नहीं, बल्कि उसका एक सीमित हिस्सा मात्र हैं। यह दर राज्य में मौजूद उन सामाजिक कारकों की ओर भी संकेत करती है, जो संक्रमण को बढ़ावा देते हैं—जैसे नशीली दवाओं का बढ़ता दुरुपयोग, असुरक्षित यौन व्यवहार, तेज़ शहरीकरण और प्रवासी श्रमिकों की अस्थिर जीवन-स्थितियां।

यौनकर्मी, ट्रक चालक, निर्माण श्रमिक और नशीली दवाओं के आदी लोग आज भी संक्रमण की श्रृंखला में सबसे अधिक जोखिम में हैं। इनके लिए चलाई जा रही लक्षित परियोजनाएं और ओपिओइड प्रतिस्थापन केंद्र निस्संदेह सही दिशा में कदम हैं, लेकिन इनकी पहुंच और प्रभाव अभी भी सीमित दिखाई देता है। नशे की समस्या को केवल उपचार या दवा वितरण तक सीमित रखना पर्याप्त नहीं होगा। जब तक इसे सामाजिक पुनर्वास, रोजगार के अवसरों और मानसिक स्वास्थ्य समर्थन से नहीं जोड़ा जाता, तब तक एचआईवी नियंत्रण अधूरा ही रहेगा।

इस पूरी लड़ाई में सबसे बड़ी और सबसे अदृश्य बाधा आज भी कलंक है। लोग बीमारी से कम और समाज की प्रतिक्रिया से अधिक डरते हैं। एचआईवी आज भी नैतिकता, चरित्र और "गलती" के साथ जोड़कर देखा जाता है, जबकि यह एक चिकित्सकीय स्थिति है। यही सोच लोगों को जांच से दूर रखती है, इलाज में देरी कराती है और संक्रमण को चुपचाप फैलने का अवसर देती है। रेड रिबन क्लब, रेडियो जिंगल और सोशल मीडिया अभियानों से जागरूकता बढ़ी है, लेकिन ग्रामीण इलाकों और पारंपरिक सामाजिक संरचनाओं तक यह संदेश अभी भी पूरी मजबूती से नहीं पहुंच पाया है।

एचआईवी नियंत्रण को केवल स्वास्थ्य विभाग की जिम्मेदारी मानना एक बड़ी रणनीतिक भूल होगी। सुरक्षित प्रवास, श्रमिक कल्याण, नशामुक्ति, लैंगिक समानता और वैज्ञानिक यौन शिक्षा—ये सभी विषय सीधे इस समस्या से जुड़े हैं। प्रवासी श्रमिकों के लिए कार्यस्थल पर जांच, परामर्श और इलाज की व्यवस्था न केवल संक्रमण को नियंत्रित कर सकती है, बल्कि उनकी उत्पादकता और सामाजिक सुरक्षा भी बढ़ा सकती है। परिवहन, श्रम, शिक्षा और महिला एवं बाल विकास विभागों के साथ समन्वय के बिना कोई भी प्रयास स्थायी परिणाम नहीं दे सकता।

भारत के "एड्स मुक्त" लक्ष्य को हासिल करने में राज्यों की भूमिका निर्णायक है। राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण संगठन द्वारा तय की गई रणनीतियों को ज़मीनी स्तर पर लागू करने में हरियाणा जैसे संसाधन-संपन्न और प्रशासनिक रूप से सक्षम राज्य अगर संतुलित दृष्टिकोण अपनाते हैं, तो वे केवल आंकड़ों में सफलता हासिल नहीं करेंगे, बल्कि नीति-मॉडल के रूप में भी उभर सकते हैं।

अंततः, हरियाणा का एचआईवी जांच अभियान निस्संदेह एक बड़ी उपलब्धि है। इसने यह साबित किया है कि राजनीतिक इच्छाशक्ति और प्रशासनिक प्रतिबद्धता के साथ बड़े पैमाने पर सार्वजनिक स्वास्थ्य हस्तक्षेप संभव हैं। लेकिन यह सफलता तभी पूर्ण मानी जाएगी जब इसके साथ जुड़ी चेतावनियों को गंभीरता से सुना जाए। यदि राज्य कलंक तोड़ने, रोकथाम को इलाज जितनी प्राथमिकता देने और संक्रमण के सामाजिक कारणों पर ईमानदारी से काम करने में सफल होता है, तो आज के आंकड़े कल की सफलता की कहानी बनेंगे। अन्यथा, यही आंकड़े भविष्य के एक बड़े और गहरे संकट का शुरुआती संकेत बनकर रह जाएंगे।

(डॉ. सत्यवान सौरभ, पीएचडी (राजनीति विज्ञान), एक कवि और सामाजिक विचारक

"एआई-समिट 2026, राह में रोड़े अटकाने की नाकाम कोशिश"

विजय सहगल

इंडिया एआई इंपेक्ट एक्स्पो 2026 का इन दिनों 16 से 21 फरवरी तक वृहद आयोजन भारत मंडपम नई दिल्ली में किया गया जिसका उद्घाटन प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने किया। इस विश्वस्तरीय सम्मेलन में 100 से ज्यादा देशों के प्रतिनिधि भाग ले रहे हैं। इस समिट के महत्व को इस बात से भी समझा जा सकता है कि फ़्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रॉन, संयुक्त राष्ट्रसंगठन के महासचिव एंटोनियो गुटेरेस सहित दुनियाँ के 20 देशों के राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री एवं सूचना प्रौध्योगिकी की विश्वविख्यात कंपनियों के सीईओ, यथा गूगल के सीईओ सुंदर पिचाई, रिलायंस इंडस्ट्रीज़ के चेयरमैन मुकेश अंबानी, ओपन एआई के सैम, स्केल एआई के एलेक्सजेंडर वांग, एन्थ्रोपिक के अमोदेई, भारत एयरटेल के भारती मित्तल सहित अनेकों स्टार्ट अप भाग ले रहे है। इस एक्स्पो में 300 से अधिक दिग्गज कंपनियों के प्रमुखों ने 250 अरब डॉलर का निवेश कर एआई प्रोजेक्टों को भारत मे स्थापित करने का आश्वासन दिया है जो आने वाले समय में देश के आर्थिक विकास और रोजगार के नए आयाम खोलेगा।

दिल्ली में चल रही इंडिया एआई समिट में 19 फरवरी 2026 का दिन 2026 का दिन गौरवशाली पल था जब सबसे कम उम्र के वक्ता 8 वर्षीय रणवीर सचदेवा ने एआई सबमिट को संबोधित किया। पाँच साल की उम्र से ही अपनी एआई योग्यता, प्रतिभा और कौशल दिखाने वाले रणवीर सचदेवा, बच्चों के नज़रिये से एक बुक भी लिख चुके हैं जिसकी प्रशंसा संयुक्त राष्ट्र के महासचिव एंटोनियो गुटेरेस भी कर चुके है। हमारे यहाँ एक हिन्दी लोकोक्ति है कि, ₹होनहार बिरवान के होत चीकने पातर जिसका अर्थ है प्रतिभावान व्यक्ति के गुण, बचपन से ही दिखाई देने लगते हैं जो रणवीर जैसे होनहार बच्चे पर सटीक बैठती है।

जहाँ एक ओर तो इस प्रतिभाशाली, होनहार बालक ने देश का मस्तक, अपने ज्ञान और कौशल से ऊंचा किया, वहीं दूसरी ओर गलगोटिया यूनिवर्सिटी की प्रौढ़ महिला प्रोफेसर नेहा सिंह ने अपने झूठ, फ़रेब और कपट पूर्ण वक्तव्य से देश के मान सम्मान को शर्मसार कर दिया। गलगोटिया यूनिवर्सिटी, ग्रेटर नोएडा की इस प्रोफेसर ने अपने संस्थान के स्टाल पर, चीन मे निर्मित और आयातित एक एआई रोबोट डॉग को अपनी गलगोटिया यूनिवर्सिटी मे विकसित और विनिर्मित बता कर प्रदर्शित कर झूठी, वाहवाही बटोरी। इंडिया एआई सबमिट 2026 को संबोधित करने वाले एक आठ साल के बालक रणवीर को तो इस बात की समझ थी कि हमे मिथ्या खोज और शोध को प्रदर्शित नहीं करना है पर बेहद अफसोस, विश्वविध्यालय की प्रोफेसर को दूसरे देश की खोज को बेहूदा, धृष्टतापूर्वक अपने संस्थान की खोज बताने मे तनिक भी शर्म और लज्जा नहीं आई। चोरी और सीनाजोरी की पराकाष्ठा देखिये कि मीडिया द्वारा गलगोटिया यूनिवर्सिटी के रोबोट के झूठे दावे की पोल खुल जाने के बावजूद उस प्रोफेसर ने अपने आप को सही ठहराते हुए कुतर्क देकर, गलती का ठीकरा मीडिया के सिर पर फोड़ते हुए कहा कि मै इसे ठीक से समझा नहीं पायी या इसे ठीक से समझा नहीं गया।

बड़बोलापन यहीं नहीं रुका. उन्होने गलगोटिया यूनिवर्सिटी द्वारा एआई पर 350 करोड़ के रूपये के निवेश का भी दावा कर दिया पर इसके शीर्षवार निवेश को स्पष्ट नहीं कर सकी। इस मामले को सामने आने पर सरकार ने गलगोटिया यूनिवर्सिटी के स्टाल को तुरंत बंद करा कर, एआई समिट से बाहर कर दिया और स्टाल की लाइट भी काट दी। मामले के तूल पकड़ने पर गलगोटिया यूनिवर्सिटी के प्रबंधन ने प्रोफेसर नेहा सिंह के कृत्य के लिये माफी मांगते हुए कहा कि हमारे प्रतिनिधि को सही जानकारी नहीं थी। उन्होने कैमरे पर आने के अतिउत्साह के कारण गलत बयानी की. वास्तव मे उन्हे प्रेस से बातचीत के लिये अधिकृत भी नहीं किया गया था। एक महिला प्रोफेसर की मीडिया के सामने प्रसिद्धि पाने के अतिउत्साह और महत्वाकांक्षा ने अपने और अपने संस्थान का अहित तो किया ही, देश और दुनियाँ के सामने भारत की एआई समिट के सफल आयोजन पर बट्टा लगाने का कार्य किया जिसकी जितनी निंदा की जाय, कम है।

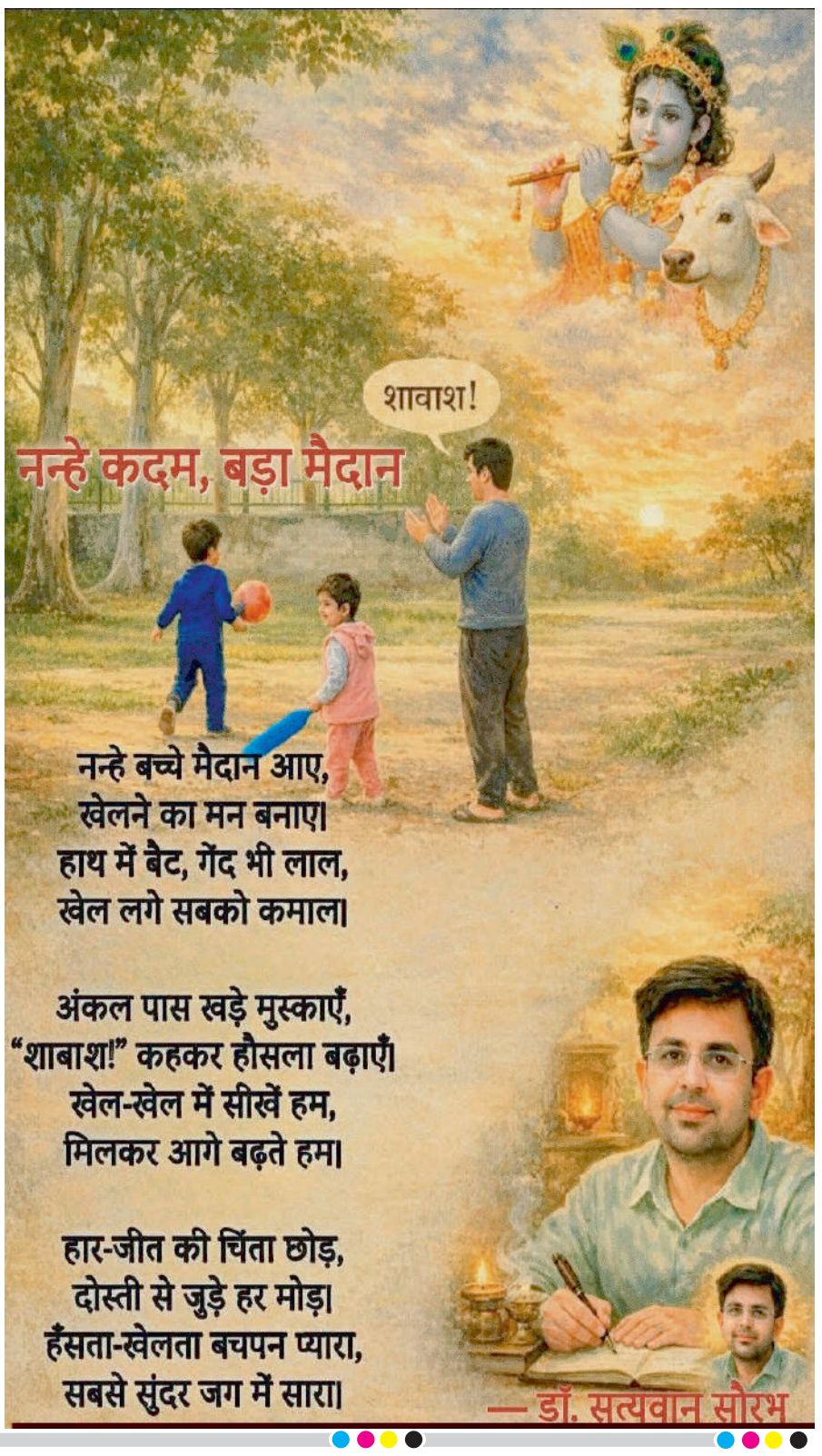

जब्त शराब गिरफ्तार व सील दुकान शहर के लाइसेंसी वाइन शॉप में नकली शराब !

बिसरा रोड का वाइन शॉप सील,तीन पकड़े गये भारी मात्र नकली शराब संग ब्रांडेड बोतल जब्त

परिवहन विशेष न्यूज

राउरकेला: अगर आप वाइन शॉप से शराब खरीदकर पीते हैं, तो सावधान हो जाइए। शहर के बिश्रा रोड के पास स्थित एक सरकारी लाइसेंस प्राप्त शराब दुकान से आबकारी विभाग ने भारी मात्रा में नकली व मिलावटी विदेशी शराब बरामद की है। इस कार्रवाई में तीन लोगों को गिरफ्तार किया गया है।

आबकारी विभाग को गुप्त सूचना मिली थी कि दुकान के पीछे स्थित एक कमरे में नकली विदेशी शराब तैयार की जा रही है। सूचना के आधार पर छापेमारी की गई, जहां तीन व्यक्ति बोतलों में शराब भरकर उन पर डुप्लीकेट विदेशी ब्रांड के लेबल लगा रहे थे। मौके से बड़ी मात्रा में नकली शराब जब्त की गई।

होली से पहले शहर में इतनी बड़ी मात्रा में नकली विदेशी शराब का पकड़ा जाना जहां आबकारी विभाग की बड़ी सफलता मानी जा रही है, वहीं इस अवैध कारोबार ने विभाग की निष्क्रियता पर सवाल उठा रहा है जहां कुछ लोगों के द्वारा विभागीय चाभी हाँथ में रखी जाने की बात हो रही है1 रोजाना ट्रकों में करोड़ों के मूल्य के शराब राउरकेला से विभिन्न जिलों में आपूर्ति करने वाले विभागीय मंद इच्छा के कारण फल फूल रहे हैं1

जानकारों ने स्थानीय कर्मचारियों व अधिकारीयों के कॉल विवरण व्हाट्सअप जाँच की मांग की1 जांच में यह भी सामने आया है कि नकली शराब का नेटवर्क बनाई और संबलपुर तक फैला हुआ है। बताया जा रहा है कि यह कारोबारी संबलपुर से नकली विदेशी शराब लाकर राउरकेला बाजार में सप्लाई कर रहे थे। इस कड़ी में बनाई और संबलपुर में भी छापेमारी जारी है। इसके अलावा, जिस दुकान से नकली शराब बरामद हुई है, उसके बनाई स्थित एक अन्य आउटलेट की भी जांच की जा रही है। आबकारी विभाग ने संकेत दिया है कि इस मामले में और गिरफ्तारियां हो सकती हैं।फिलहाल, गिरफ्तार आरोपियों से पूछताछ जारी है और पूरे नेटवर्क का भंडाफोड़ करने की कोशिश की जा रही है।आबकारी विभाग के अधीक्षक झसकेतन बरीहा ने शनिवार की दोपहर में मीडिया से बातचीत में इसकी पुष्टि की और बताया की आबकारी आयुक्त के आदेश पर यह अभियान चल रहा है।बिसरा रोड के उस वाइन शॉप को सील कर ओनर को नोटिस जारी किया गया है।गिरफ्तार आरोपियों में संदीप गुप्ता,जय प्रकाश गुप्ता व शिव सिंग गोंड हैं, जो गांधी रोड व गुरुद्वारा रोड में किराये के मकान में रहते है।

रांची निकाय चुनाव में लगे वाहन ड्राइवर की चूड़ा खाकर मौत

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

रांची , नगर निकाय चुनाव की तैयारियों के बीच राजधानी रांची के मोरहाबादी मैदान स्थित डिस्पैच सेंटर में चुनाव ड्यूटी पर तैनात एक कर्मचारी की मौत से हड़कंप मच गया। खड़ी गाड़ी के अंदर कर्मचारी का शव मिलने के बाद पूरे परिसर में सनसनी फैल गई। घटना से आक्रोशित वाहन चालकों ने प्रशासन के खिलाफ जमकर विरोध प्रदर्शन किया और धरने पर बैठ गए।

जानकारी के अनुसार मृतक की पहचान चालक सुनील मुंडा के रूप में हुई है, जिन्हें नगर निकाय चुनाव के तहत वाहन सहित ड्यूटी में लगाया गया था। बताया जा रहा है कि बीती रात उन्होंने चूड़ा खाकर गाड़ी में ही विश्राम किया था। सुबह काफी देर तक बाहर नहीं निकलने पर अन्य चालकों को संदेह हुआ। गाड़ी की जांच करने पर उन्हें अचेत अवस्था में पाया गया। तत्काल सूचना अधिकारियों को दी गई, जिसके बाद उनकी मौत की पुष्टि हुई।

घटना के बाद मौके पर मौजूद वाहन चालकों में भारी नाराजगी देखने को मिली। चालकों का आरोप था कि प्रशासन चुनाव कार्य के लिए उनकी गाड़ियों को जबरन अधिग्रहित कर लेता है, लेकिन खाने-पीने के लिए मिलने वाली खुराकी राशि समय पर नहीं दी जाती। प्रदर्शन कर रहे चालकों ने दावा किया कि मृतक को भोजन की पर्याप्त व्यवस्था नहीं मिलने के कारण भूख से मौत हुई है। उन्होंने चुनाव ड्यूटी में लगे चालकों के लिए उचित सुविधा और भुगतान सुनिश्चित करने की मांग की।

स्थिति बिगड़ती देख प्रशासनिक और पुलिस अधिकारी तत्काल मोरहाबादी मैदान पहुंचे और चालकों से वार्ता कर उन्हें शांत कराया। अधिकारियों ने मौके पर ही लंबित खुराकी राशि का भुगतान कराया, जिसके बाद प्रदर्शन समाप्त हुआ। इधर पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए अस्पताल भेज दिया है। प्रशासन ने कहा है कि पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद ही मौत के वास्तविक कारणों का खुलासा हो सकेगा। घटना के बाद चुनाव व्यवस्था और कर्मियों की सुविधाओं को लेकर कई सवाल खड़े हो गए हैं।

बाबा बैद्यनाथ का पूजा कर सांसद निशिकांत के घर पहुंचे अदानी

बिहार , झारखंड में पावर पर दिया जोर

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

रांची, अदाणी ग्रुप के चेयरमैन गौतम अदाणी रविवार को देवघर के बाबा बैद्यनाथ धाम पहुंचे। यहां उन्होंने विधि-विधान से भगवान भोलेनाथ के दर्शन किए और पूजा-अर्चना की।

मंदिर से निकलने के बाद गौतम अदाणी सीधे गोड्डा लोकसभा सांसद डॉ. निशिकांत दुबे के निजी आवास पर पहुंचे, जहां दोनों के बीच करीब एक घंटे से अधिक समय तक शिष्टाचारपूर्ण और अत्यंत सार्थक मुलाकात हुई।

मुलाकात के दौरान डॉ. निशिकांत दुबे ने गौतम अदाणी का गर्मजोशी से स्वागत किया और उन्हें एक स्मृति चिन्ह भेंट किया, जिससे माहौल और भी सौहार्दपूर्ण हो गया।

चर्चा का मुख्य केंद्र झारखंड और बिहार में अदाणी ग्रुप की ऊर्जा परियोजनाएं, क्षेत्रीय विकास, जनकल्याण और भविष्य के निवेश अवसर रहे।

डॉ. दुबे ने गोड्डा में संचालित 1600 मेगावाट (2 x 800 MW) थर्मल पावर प्लांट की सफलता की सराहना की, जो फिलहाल बांग्लादेश को बिजली सप्लाई कर रहा है और जल्द ही भारतीय ग्रिड से जुड़ने वाला है।

उन्होंने कहा कि यह परियोजना स्थानीय अर्थव्यवस्था और रोजगार के लिए महत्वपूर्ण साबित हुई है। इस दौरान गौतम अदाणी ने कहा कि निशिकांत दुबे उनके परम मित्र हैं।

उनके प्रोत्साहन से ही उन्होंने गोड्डा में पावर प्रोजेक्ट लगाया है। उनका सहयोग गोड्डा पावर प्रोजेक्ट व ग्रुप के लिए हमेशा सकारात्मक रहा है।

उनके मार्गदर्शन में झारखंड में निवेश कर रहे हैं। उन्होंने सिमेंट प्लान के लिए कहा है और वे उस दिशा में भी काम कर रहे हैं। सांसद उसने जो कह रहे हैं वे उसे पूरा करने का प्रयास कर रहे हैं।

झारखंड बनने के बाद यहां का सबसे बड़ा उद्योग गोड्डा में लगाया गया। इसे बहुत ही कम समय में पूरा किया गया। इस कारण लोगों को रोजगार मिला है।

आज जो गोड्डा का विकास हुआ है वह सभी के लिए देखने लायक है। गौतम अदाणी की सुरक्षा के लिए उनके साथ उनके निजी अंगरक्षक भी चल रहे थे।

वे अपने निजी विमान से देवघर एयरपोर्ट पर उतरे और वहां से सीधे पूजा करने के लिए बाबा मंदिर पहुंचे। वे देवघर से बिहार के पीरपैंती में लगाए जा रहे अदाणी ग्रुप के पावर प्लांट प्रोजेक्ट का जायजा लेने के लिए रवाना हो गए।

दोनों ने बिहार के भागलपुर जिले में पीरपैंती में निर्माणाधीन 2400 मेगावाट (3 x 800 MW) ग्रीनफील्ड अल्ट्रा सुपरक्रिटिकल थर्मल पावर प्लांट पर भी विस्तार से बात की।

यह प्रोजेक्ट लगभग 27,000 करोड़ रुपये के निवेश से बन रहा है, जो बिहार में ऊर्जा सुरक्षा को मजबूत करेगा और हजारों प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रोजगार पैदा करेगा।

मुलाकात में स्थानीय समुदायों को अधिकतम लाभ पहुंचाने, सस्टेनेबल डेवलपमेंट और दोनों राज्यों में अदाणी ग्रुप के और बड़े निवेश की संभावनाओं पर सकारात्मक विचार-विमर्श हुई

डॉ. दुबे ने अदाणी से क्षेत्र की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए परियोजनाओं को और तेजी से आगे बढ़ाने का आग्रह भी किया।

मुलाकात के बाद गौतम अदाणी बिहार के पीरपैंती के लिए रवाना हो गए, जहां वे अदाणी ग्रुप के इस नए 2400 मेगावाट थर्मल पावर प्रोजेक्ट का जमीनी दौरा करेंगे और प्रगति का जायजा लेंगे।

यह दौरा आणी ग्रुप की झारखंड और बिहार में मजबूत उपस्थिति और ऊर्जा क्षेत्र में योगदान को एक बार फिर रेखांकित करता है।

बता दें कि निशिकांत दुबे गोड्डा संसदीय क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करते हैं। अदाणी के प्लांट स्थापित करवाने व कंपनी को सहयोग में सांसद की भूमिका उल्लेखनीय रही है

खालसा ब्लड डोनेट यूनिटी (रजिस्टर्ड), श्री अमृतसर साहिब द्वारा डॉक्टर सरबजीत सिंह भुल्लर और समस्त भुल्लर परिवार की ओर से अपने पिता श्री जत्थेदार मुख्तियार सिंह भुल्लर जी की वार्षिक पुण्य स्मृति में विशाल रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया।

अमृतसर, 22 फरवरी (साहिल बेरी)

शिविर का आयोजन 22 फरवरी 2026, दिन रविवार को सुल्तान विंड रोड स्थित गुरुद्वारा तूत साहिब में किया गया, जिसमें क्षेत्र के युवा भाइयों और बहनों ने बड़ी संख्या में भाग लेकर मानवता की सेवा का संदेश दिया। रक्तदान करने आए दाताओं में विशेष रूप से युवा वर्ग का उत्साह देखने योग्य था। कई युवाओं ने पहली बार रक्तदान करते हुए अपनी सामाजिक जिम्मेदारी निभाई।

डॉ. सरबजीत सिंह भुल्लर ने इस अवसर पर कहा कि रक्तदान सबसे बड़ी मानवीय सेवा है, जो किसी भी मरीज की जान बचा सकती है। उन्होंने बताया कि उनके पिता जत्थेदार मुख्तियार सिंह भुल्लर जी हमेशा समाज सेवा और जरूरतमंदों की सहायता के लिए प्रेरित करते रहे हैं। उनकी स्मृति को समर्पित यह रक्तदान शिविर हर वर्ष आयोजित किया जाता है, ताकि समाज में सेवा की भावना को और मजबूत किया जा सके।

शिविर के दौरान एकत्रित किया गया रक्त जिले के विभिन्न ब्लड सेंटरों को सौंपा गया, ताकि आपातकालीन परिस्थितियों और जरूरतमंद मरीजों की तुरंत सहायता की जा सके। मेडिकल टीम द्वारा रक्तदान करने आए सभी दाताओं की स्वास्थ्य जांच कर सुरक्षित तरीके से रक्त एकत्र किया गया।

संस्था के प्रबंधकों ने बताया कि भविष्य में भी इस प्रकार के सामाजिक प्रयास जारी रहेंगे और युवाओं को नशों से दूर रहकर सेवा कार्यों से जुड़ने के लिए प्रेरित किया जाएगा।

अंत में संस्था की ओर से रक्तदान करने वाले सभी दाताओं, सहयोगी संगठनों और मेडिकल टीम का धन्यवाद किया गया तथा मानवता की सेवा के लिए आगे आने की अपील की गई।

सरहद पार ग़ैर- कानूनी हथियारों की तस्करी में शामिल माड्यूल के साथ संबंधित दो आरोपी 5 आधुनिक पिस्तौल सहित अमृतसर से काबू

— उक्त आरोपी नज़रों से बचने के लिए ड्रोन के द्वारा भेजी खेप रात को खाली पड़े स्थानों से करते थे हासिल : सीपी अमृतसर गुरप्रीत भुल्लर*

अमृतसर, 22 फरवरी (साहिल बेरी)

मुख्य मंत्री भगवंत सिंह मान के निर्देशों अनुसार पंजाब को सुरक्षित राज्य बनाने के लिए जारी मुहिम दौरान बड़ी सफलता हासिल करते अमृतसर कमिश्नरेट पुलिस ने पांच आधुनिक पिस्तौलों सहित दो आरोपियों को गिरफ़्तार करके सरहद पार ग़ैर- कानूनी हथियारों की तस्करी में शामिल माड्यूल का पर्दाफाश किया है। यह जानकारी आज यहां डायरैक्टर जनरल आफ पुलिस (डीजीपी) पंजाब गौरव यादव ने दी।

गिरफ़्तार किए गए आरोपियों की पहचान अमृतसर के गांव भिंडी नैण के निवासी शेरा सिंह (26) और अमृतसर के गांव तूर के निवासी जगरूप सिंह उर्फ जूपा (21) के तौर पर हुई है। आरोपियों से बरामद की गई पिस्तौल में एक .30 बोर पीएकस 5 स्टौर्म पिस्तौल, एक एमएम आर्स्ट्रिया- मेड गलौक, दो .30 बोर चीनी नोरिंको पिस्तौल, एक .32 बोर पिस्तौल और 10 जिंदा कारतूस शामिल है।

डीजीपी गौरव यादव ने कहा कि प्राथमिक जांच अनुसार उक्त आरोपी सोशल मीडिया प्लेटफार्मों के द्वारा पाकिस्तान- आधारित तस्करों के संपर्क में थे और उनके निर्देशों पर ग़ैरकानूनी हथियारों की खेप हासिल करके इसको आगे अपराधक तत्वों को स्पलाई करते थे।

डीजीपी ने कहा कि ग़ैर- कानूनी हथियारों के नैटवर्क के अगले- पिछले संबंधों का पता लगाने के लिए ओर जांच जारी है।

कार्यवाही के विवरन देते पुलिस कमिश्नर (सीपी) अमृतसर गुरप्रीत सिंह भुल्लर ने बताया कि भरोसेयोग्य सूत्रों से मिली गुप्त जानकारी के आधार पर कार्यवाही करते पुलिस टीमों ने बाइपास रोड पर साढा पिंड नजदीक पूरे तालमेल के साथ आप्रेशन चलाया और शेरा सिंह और जगरूप सिंह उर्फ जूपा को एक गलौक पिस्तौल और एक .30 बोर पीएकस 5 स्टौर्म पिस्तौल सहित गिरफ़्तार कर लिया। उन्होंने कहा कि आगे वाली जांच दौरान पुलिस को दोनों गिरफ़्तार आरोपियों द्वारा किए खुलासों के आधार पर तीन और पिस्तौल बरामद हुए।

पुलिस कमिश्नर ने कहा कि दोनों गिरफ़्तार आरोपी अंतरराष्ट्री य सीमा के पास रह रहे थे, जहां से उनके लिए ग़ैर- कानूनी हथियारों की खेप हासिल करना आसान था। उन्होंने बताया कि उक्त आरोपी नज़रों से बचने के लिए ड्रोन के द्वारा भेजी गई हथियारों की खेप रात समय पर खाली पड़े स्थानों से हासिल करते थे।।

उन्होंने कहा कि आरोपी शेरा सिंह का पुराना अपराधिक रिकार्ड है जिस पर लड़की के साथ बलात्कार और उसको कत्ल कर आग लगाने सहित होने घृणित अपराध दर्ज है।एक अन्य मामले में उससे लगभग 500 ग्राम हेरोइन भी बरामद की गई थी।

इस संबंधित पुलिस थाना छावनी, अमृतसर में हथियार एक्ट की धारा 25 अधीन एफआईआर नं. 28 तारीख़ 14-02-2026 दर्ज है।

टाटा से भूवनेश्वर जा रही शान्ति लता बस जल कर स्वाहा

ड्राइवर की सुध-बुध से बची जानें, कुछ लोगों का माल नष्ट

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

जमशेदपुर , टाटा से भुवनेश्वर जा रही शांति लता नामक यात्री बस में शनिवार को बहरागोड़ा और केरुकोचा के बीच अचानक भीषण आग लग गई। प्रारंभिक जानकारी के अनुसार बस की बैटरी में शॉर्ट सर्किट होने से आग लगी, जिसने देखते ही देखते पूरी बस को अपनी चपेट में ले लिया। बस से धुआं उठता देख चालक ने सूझबूझ का परिचय देते हुए तुरंत वाहन रोक दिया और सभी यात्रियों को सुरक्षित नीचे उतार दिया। समय रहते यात्रियों को बाहर निकाल लिए जाने से एक बड़ा हादसा टल गया। हालांकि, कई यात्रियों का सामान आग में जलकर नष्ट हो गया। घटना की सूचना मिलते ही स्थानीय पुलिस और दमकल विभाग मौके पर पहुंचे। दमकल कर्मियों ने काफी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया, लेकिन तब तक बस पूरी तरह जलकर क्षतिग्रस्त हो चुकी थी।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023